CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14.1

श्री ज्ञानचन्द्रिका ग्रन्थमाला पुष्प नं. ६

卐 श्री वीतरागाय नमः 卐

5209

भेद संग्रह

(जैन सिद्धांत की कुंजी)

संग्रहकर्ता :
पं. सरनाराम जैन

प्रकाशक :
श्री ज्ञानचन्द्रिका ग्रंथमाला
श्री दि. जैन उदासीन श्राविकाश्रम तुकोगंज
इन्दौर (म. प्र.)

द्वितीयावृत्ति २०००

अक्षयतृतीया
वीर सं २४९९
वि. सं. २०३०
सन् १९७३

मूल्य ५० पैसे

मूल्य १)८०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGang

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanas

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री ज्ञानचन्द्रिका ग्रन्थमाला पुष्प नं. ६

卐 श्री वीतरागाय नमः 卐

ॐ

भेद संग्रह

(जैन सिद्धांत की कुंजी)

संग्रहकर्ता :
पं. सरनाराम जैन

प्रकाशक :
श्री ज्ञानचन्द्रिका ग्रंथमाला
श्री दि. जैन उदासीन श्राविकाश्रम तुकोगंज
इन्दौर (म. प्र.)

द्वितीयावृत्ति
२०००

अक्षयतृतीया
वीर स. २४९९
वि. सं. २०३०
सन् १९७३

मूल्य
५० पैसे

मूल्य १)५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो शब्द

भेद संग्रह पुस्तक अपने नाम से ही अर्थ को स्पष्ट कर रही है याने इसमें द्रव्य, तत्त्व, गुणस्थान, मार्गणा, कर्म एवं भावादिक के भेद प्रभेदों का वर्णन है, परस्पर चर्चा के लिये यह बहुत ही उपयोगी ग्रंथ है, इसका द्वितीय भाग भी प्रकाशन होने जा रहा है। इसका संकलन तत्त्वार्थ सूत्र आदि सिद्धांत ग्रंथों के आधार से ही किया गया है। अल्पज्ञानी एवं विद्वानों सर्व के लिये परमोपयोगी हैं। अतः सर्व ही कल्याणार्थियों को कंठस्थ करने के प्रति संकलनकर्ता की हार्दिक प्रार्थना है।

अलमिति विस्तरेण
ता० १—३—१९७३ ई०

—आपका साधर्मी
पं. रतनलाल जैन
इन्द्रभवन, इन्दौर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय सूचि

अध्याय १:— पृष्ठ १ से १५ तक

१ गुणस्थान २ मार्गणास्थान ३ जीव समास
४ आश्रव ५ ध्यान ६ पर्याप्ति ७ प्राण
८ संज्ञा ९ उपयोग का वर्णन है

अध्याय २:— पृष्ठ १५ से २८ तक

१ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय ४ भाव ५ पुद्गल
की विभाव व्यंजन पर्याय ६ पदार्थ (७ तत्व)
७ सत्ता ८ द्रव्यों के सामान्य व विशेष स्वभाव

अध्याय ३:-- पृष्ठ २८ से ३५ तक

१ लक्षण २ प्रमाण ३ नय ४ निक्षेप
५ सप्तभंग ६ सम्बंध

अध्याय ४:— पृष्ठ ३५ से ३९ तक

१ देव २ नरक ३ नरलोक ४ इन्द्र के भेदों
का वर्णन है। मोक्षशास्त्र अध्याय ४ के आधारसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्याय ५:— पृष्ठ ३९ से ६१ तक

१ कर्म के भेद प्रभेद २ पुण्य पापादि भेद ३ कर्मबंध के हेतु ४ बंध, उदय सत्ता के नियमों का वर्णन है।

अध्याय ६:— पृष्ठ ६१ से ८६ तक

१ सम्यक्दर्शन २ श्रावकधर्म १२ व्रतों का ३ मुनि धर्म (झंवर निर्जरा का)

अध्याय ७:— पृष्ठ ८६ से १०० तक

१ पंच परमेष्ठी के १४३ गुणों का २ व्यसन ३ प्रतिमाओं का वर्णन है।

अध्याय ८:— पृष्ठ १०० से १०८ तक

१ कर्म की ४७ अवस्थाओं की प्रकृतियों का वर्णन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीवीतरागाय नमः

5209

पहला अध्याय

गुणस्थान—१४

१ मिथ्यात्व
२ सासादन
३ मिश्र
४ अविरत सम्यग्दृष्टि
५ देश-विरत
६ प्रमत्त-विरत
७ अप्रमत्त विरत
८ अपूर्व करण
९ अनिवृत्ति करण
१० सूक्ष्म साम्पराय
११ उपशांत मोह
१२ क्षीण मोह
१३ सयोग केवली
१४ अयोग केवली

मिथ्यात्व—२

१ अनादि मिथ्यादृष्टि
२ सादि मिथ्यादृष्टि

अविरत सम्यग्दृष्टि—३

१ औपशमिक सम्यग्दृष्टि
२ क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि
३ क्षायिक सम्यग्दृष्टि

उपशम सम्यक्त्व—२

१ प्रथम उपशम सम्यक्त्व
२ द्वितिय उपशम सम्यक्त्व

अप्रमत्त विरत—२

१ स्वस्थान
२ सातिशय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपूर्व करण—२
१ उपशमक
२ क्षपक

अनिवृत्ति करण—२
१ उपशमक
२ क्षपक

सूक्ष्म साम्प्राय —२
१ उपशमक
२ क्षपक

श्रेणी—२
१ उपशम श्रेणी
२ क्षपक श्रेणी

उपशम श्रेणी
१ आठवां
२ नववां
३ दसवां
४ ग्यारवां

क्षपक श्रेणी
१ आठवां
२ नववां
३ दसवां
४ बारवां

करण—३
१ अधः करण
२ अपूर्व करण
३ अनिवृत्ति करण

मार्गणा—१४
१ गति
२ इंद्रिय
३ काय
४ योग
४ वेद
५ कषाय
७ ज्ञान
८ संयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९ दर्शन
१० लेश्या
११ भव्यत्व
१२ सम्यक्त्व
१३ संज्ञित्व
१४ आहार

गति--४
१ नरक गति
२ तिर्यंच गति
३ देव गति
४ मनुष्य गति

इन्द्रिय—२
१ द्रव्य इन्द्रिय
२ भाव इन्द्रिय

द्रव्य इन्द्रिय—२
१ निर्वृत्ति
२ उपकरण

निर्वृत्ति—२
१ बाह्य निर्वृत्ति
२ आभ्यन्तर निर्वृत्ति

उपकरण—२
१ बाह्य उपकरण
२ आभ्यन्तर उपकरण

भाव इन्द्रिय—२
१ लब्धि
२ उपयोग

इन्द्रिय—५
१ स्पर्शन इन्द्रिय
२ रसना इन्द्रिय
३ घ्राण इन्द्रिय
४ चक्षुः इन्द्रिय
५ कर्ण इन्द्रिय

काय—२
१ स्थावर काय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ त्रस काय

स्थावर काय—५

१ पृथ्वी काय
२ जल काय
३ अग्नि काय
४ वायु काय
५ वनस्पति काय

त्रस काय—४

१ दो इन्द्रिय
२ तीन इन्द्रिय
३ चार इन्द्रिय
४ पांच इन्द्रिय

काय—६

१ पृथ्वी काय
२ जल काय
३ अग्नि काय
४ वायु काय
५ वनस्पति काय
६ त्रस काय

काय—२

१ बादर काय
२ सूक्ष्म काय

वनस्पति—२

१ प्रत्येक वनस्पति
२ साधारण वनस्पति

साधारण वनस्पति—२

१ नित्य निगोद
२ इतर निगोद

निगोदिया जीव कहां कहां नहीं रहते

१ पृथ्वी
२ जल
३ अग्नि
४ वायु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ केवली भगवान
६ आहारक शरीर
७ देव
८ नारकी

निगोदिया जीव में एक होते है

१ आहार
२ आयु
३ श्वासोच्छवास
४ काय

योग—२

१ द्रव्य योग
२ भाव योग

योग—३

१ मनो योग
२ वचन योग
३ काय योग

मनोयोग—४

१ सत्य मनोयोग
२ असत्य मनोयोग
३ उभय मनोयोग
४ अनुभय मनोयोग

वचन योग—४

१ सत्य वचन योग
२ असत्य वचन योग
३ उभय वचन योग
४ अनुभय वचन योग

काय योग—७

१ औदारिक काय योग
२ औदारिक मिश्र काय योग
३ वैक्रियिक काय योग
४ वैक्रियिक मिश्र काय योग
५ आहारक काय योग
६ आहारक मिश्र काय योग
७ कार्माण काय योग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योग—१५
१ मनो योग—४
२ वचन योग—४
३ काय योग—७

वेद—३
१ स्त्री वेद
२ पुरुष वेद
३ नपुंसक वेद

वेद—२
१ द्रव्य वेद
२ भाव वेद

कषाय—२
१ कषाय
२ नो कषाय

कषाय—४
१ क्रोध
२ मान
३ माया
४ लोभ

कषाय—१६
४ अनन्तानुबधि क्रोध, मान, माया, लोभ
४ अप्रत्याख्यानावरणी क्रोध, मान, माया, लोभ
४ प्रत्याख्याना वरणी क्रोध, मान, माया, लोभ
४ संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ

नो कषाय—९
१ हास्य
२ रति
३ अरति
४ शोक
५ भय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ जुगुप्सा
७ स्त्री वेद
८ पुरुष वेद
९ नपुंसक वेद

कषाय — २५
१६ कषाय
९ नोकषाय

कषाय — ५२
१३ अनन्तानुबन्धी
१३ अप्रत्याख्यानावरणी
१३ प्रत्याख्यानावरणी
१३ संज्वलन

ज्ञान — ८
१ मति ज्ञान
२ श्रुत ज्ञान
३ अवधि ज्ञान
४ मनः पर्यय ज्ञान
५ केवल ज्ञान
६ कुमति ज्ञान
७ कुश्रुत ज्ञान
८ कुअवधि ज्ञान

मतिज्ञान — ४
१ अवग्रह
२ ईहा
३ अवाय
४ धारणा

श्रुतज्ञान — २
१ अंग बाह्य
२ अंग प्रविष्ट

अवधिज्ञान — २
१ भव प्रत्यय
२ क्षयोपशम निमित्तक

अवधिज्ञान — ३
१ देश अवधि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ परम अवधि
३ सर्व अवधि

अवधिज्ञान—६

१ अनुगामी
२ अननुगामी
३ वर्द्धमान
४ हीयमान
५ अवस्थित
६ अनवस्थित

मन:पर्ययज्ञान—२

१ ऋजु मति
२ विपुल मति

मिथ्याज्ञान—३

१ संशय
२ विपर्यय
३ अनध्यवसाय

संयम—७

१ असंयम
२ संयमासंयम
३ सामायिक
४ छेदोपस्थापना
५ परिहार-विशुद्धि
६ सूक्ष्म-साम्पराय
७ यथाख्यात

संयम—५

१ अहिंसा आदिक ५ व्रत धारण करना
१ ईर्या-पथ आदि ५ समि-तियों का पालना
३ क्रोध आदि कषायों का निग्रह करना
४ मनोयोग आदि ३ योगों को रोकना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ स्पर्शन आदिक ५ इन्द्रियों का विजय करना

चारित्र—४

१ स्वरूपाचरण
२ देश संयम
३ सकल संयम
४ यथाख्यात चारित्र

दर्शन—४

१ चक्षु दर्शन
२ अचक्षु दर्शन
३ अवधि दर्शन
४ केवल दर्शन

लेश्या—२

१ द्रव्य लेश्या
२ भाव लेश्या

लेश्या—६

१ कृष्ण
२ नील
३ कापोत
४ पीत
५ पद्म
६ शुक्ल

संज्ञित्व—२

१ संज्ञित्व
२ असंज्ञित्व

आहार—२

१ आहारक
२ अनाहारक

विग्रहगत्ति—४

१ ऋजुगति
२ पाणि मुक्ता गति
३ लांगलिका गति
४ गोमुत्रिका गति

जन्म—३

१ उपपाद जन्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ गर्भ जन्म ३ संमूर्च्छन जन्म	भव्यत्व——२ १ भव्यत्व २ अभव्यत्व

अनन्तानुबन्धी और अप्रत्याख्यानावरण कषाय में छहों लेश्या होती है किन्तु प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन कषाय में ३ शुभ लेश्या ही होती है।

अनन्तानुबन्धी=६×४=२४ लेश्या
अप्रत्याख्यानावरण=६×४=२४ लेश्या
प्रत्याख्यानावरण=३×४=१२ लेश्या
संज्वलन=३×४=१२ लेश्या

सम्यक्त्व (श्रद्धा)—६ १ मिथ्यात्व २ सासादन ३ मिश्र ४ औपशमिक ५ क्षायोपशमिक	६ क्षायिक गर्भ जन्म — ३ १ जरायुज २ अंडज ३ पोत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनाहारक कहां २ होता है

१ विग्रह गति में
२ किसी-किसी समुद्धात में
३ अयोग केवली गुणस्थान में

जीव समास—१४

१ एक इन्द्रिय सूक्ष्म
२ एक इन्द्रिय बादर
३ दो इन्द्रिय बादर
४ तीन इन्द्रिय बादर
५ चार इन्द्रिय बादर
६ पांच इन्द्रिय असंज्ञी बादर
७ पांच इन्द्रिय संज्ञी बादर

ऊपर के ७ भेद पर्याप्तक
,, ,, ,, अपर्याप्तक

जीव समास—१९

२ पृथ्वी काय सूक्ष्म बादर
२ जल ,, ,, ,,
२ अग्नि काय सूक्ष्म बादर
२ वायु ,, ,, ,,
२ इतरनिगोद ,, ,,
२ नित्य निगोद ,, ,,
१ सप्रतिष्ठित प्रत्येक बादर
१ अप्रतिष्ठित ,, ,,
१ दो इन्द्रिय बादर
१ तीन ,, ,,
१ चार ,, ,,
१ पांच इन्द्रिय असंज्ञी बादर
१ पांच इन्द्रिय संज्ञी बादर

जीव समास— ५७

ऊपर के १९ भेद लब्धि अपर्याप्तक
ऊपर के १९ भेद निर्वृत्ति अपर्याप्तक
ऊपर के १९ भेद पर्याप्तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पांच इन्द्रिय तिर्यंच—३

१ थल चर
२ नभ चर
३ जल चर

जीव समास—९८

४२ एक इन्द्रिय तिर्यंच
३ दो ,, ,,
३ तीन ,, ,,
३ चार ,, ,,
१८ संमूर्च्छन ५ इन्द्रिय तिर्यंच
१२ गर्भज ५ इन्द्रिय कर्म भूमिज तिर्यंच
४ गर्भज ५ इन्द्रिय भोग भूमिज तिर्यंच
९ मनुष्य
२ देव
२ नारकी

पर्याप्ती—६

१ आहार
२ शरीर
३ इन्द्रिय
४ स्वासोच्छ्वास
५ भाषा
६ मन

नोटः—एक इन्द्रिय जीव के दो इन्द्रिय से पांच इन्द्रि असंज्ञी के ५, और संज्ञी ६ पर्याप्ती होती है।

प्राण—१०

५ इन्द्रिय
३ बल
१ आयु
१ स्वासोच्छ्वास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोटः-एक इन्द्रिय जीव के ४, दो इन्द्रिय के ६, तीन इन्द्रिय के ७, चार इन्द्रिय के ८, पांच इन्द्रिय असंज्ञी के ९ संज्ञी के १० प्राण होते है।

बल—३

१ मनोवल
२ वचन बल
३ काय बल

संज्ञा—४

१ आहार
२ भय
३ मैथुन
४ परिग्रह

विकलत्रय—३

१ दो इन्द्रिय
२ तीन इन्द्रिय
३ चार इन्द्रिय

उपयोग—२

१ दर्शन उपयोग
२ ज्ञान उपयोग

उपयोग—१२

४ दर्शन उपयोग
८ ज्ञान उपयोग

परिवर्तन—५

१ द्रव्य परिवर्तन
२ क्षेत्र परिवर्तन
३ काल परिवर्तन
४ भव परिवर्तन
५ भाव परिवर्तन

योनि

८४ लाख

मिथ्यात्व – २

१ गृहीत मिथ्यात्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ अगृहीत मिथ्यात्व

मिथ्यात्व—५

१ एकांत मिथ्यात्व
२ विनय मिथ्यात्व
३ विपरीत मिथ्यात्व
४ संशय मिथ्यात्व
५ अज्ञान मिथ्यात्व

अविरति—१२

६ काय की रक्षा नहीं करना
५ इन्द्रिय को वश नहीं करना
१ मन को वश नहीं करना

अविरति—३

१ अनन्तानुबन्धी कषाय उदय जनित अविरति
२ अप्रत्याख्यानवरण कषाय उदय जनित अविरति
३ प्रत्याख्यानवरण कषाय उदय जनित अविरति

प्रमाद—१५

४ विकथा
४ संज्वलन के तीव्र उदय जनित कषाय
५ इन्द्रिय विषय
१ निद्रा
१ स्नेह

विकथा—४

१ स्त्री कथा
२ चोर कथा
३ भोजन कथा
४ राज कथा

कषाय

संज्वलन और नो कषा
के मंद उदिय जनत कषा

ध्यान—४

१ आर्त ध्यान
२ रौद्र ध्यान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ धर्म ध्यान
४ शुक्ल ध्यान

आर्तध्यान—४
१ इष्ट वियोग
२ अनिष्ट संयोग
३ वेदना जनित
४ निदान बन्ध

रौद्र ध्यान—४
१ हिंसानंदी
२ मृषानंदी
३ चौर्यानंदी
४ परिग्रह नंदी

धर्म ध्यान—४
१ आज्ञा विचय
२ अपाय विचय
३ विपाक विचय
४ संस्थान विचय

शुक्ल ध्यान—४
१ पृथक्त्व वितर्क विचार
२ एकत्व वितर्क विचार
३ सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति
४ व्युपरत क्रिया निवर्ती

दूसरा अध्याय

द्रव्यों की जाति—६
१ जीव
२ पुद्गल
३ धर्म
४ अधर्म
५ आकाश
६ काल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यों की गणना

जीव अनन्त
पुद्गल अनन्तानन्त
धर्म–१
अधर्म–१
आकाश–१
काल असंख्यात

द्रव्यों के प्रदेश

एक जीव के, धर्म के, अधर्म के, लोकाकाश के बराबर असंख्यात प्रदेश।
पुद्गल के संख्यात असंख्यात और अनंत प्रदेश।
आकाश के अनन्तानन्त प्रदेश।
काल का एक प्रदेश।

अस्तिकाय या बहुप्रदेशी-

१ जीव
२ पुद्गल
३ धर्म
४ अधर्म
५ आकाश

अजीव—५

१ पुद्गल
२ धर्म
३ अधर्म
४ आकाश
५ काल

अमूर्तिक—५

१ जीव
२ धर्म
३ अधर्म
४ आकाश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ काल

क्रियावान—२

१ जीव

२ पुद्गल

वैभाविक—२

१ जीव

२ पुद्गल

गुण—२

१ सामान्य

२ विशेष

सामान्य गुण—६

१ अस्तित्व

२ वस्तुत्व

३ द्रव्यत्व

४ प्रमेयत्व

५ अगुरुलघुत्व

६ प्रदेशत्व

विशेष गुण

जीव का चेतना, सम्यक्त्वादि

पुद्गल का स्पर्श-रस, गंध, वर्ण

धर्म का गतिहेतुत्व

अधर्म का स्थितिहेतुत्व

आकाश का अवगाहनहेतुत्व

काल का परिणमनहेतुत्व

जीव—२

१ संसारी

२ सिद्ध

संसारी—२

१ स्थावर

२ त्रस

पुद्गल—२

१ परमाणु

२ स्कंध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

आकाश—२
१ लोकाकाश
२ अलोकाकाश

काल—२
१ व्यवहार काल
२ निश्चय काल

गुण—२
१ अनुजीवी
२ प्रतिजीवी

जीव के अनुजीवी गुण
१ चेतना
(क) ज्ञान
(ख) दर्शन
२ सम्यक्त्व (श्रद्धा)
३ चारित्र
४ सुख
५ दान
६ लाभ
७ भोग
८ उपभोग
९ वीर्य
१० भव्यत्व
११ अभव्यत्व
१२ जीवत्व
१३ वैभाविक
१४ कर्तृ
१५ भोक्तृत्व
१६ प्रभुत्व
१७ विभुत्व

जीव के प्रतिजीवी गु[ण]
१ अव्याबाध
२ अवगाह
३ अगुरुलघुत्व
४ सूक्ष्मत्व
५ नास्तित्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमूर्तत्व

ीव के अधिकार-९

जीव

उपयोग

अमूर्तिक

कर्ता

भोक्ता

स्वदेह प्रमण

संसारी

सिद्ध

उर्ध्व गमन स्वभाव

अथवा

जीव

चेतयिता

उपयोग विशेषितः

प्रभुः

कर्ता

भोक्ता

७ देह प्रमाण

८ अमूर्तिक

९ कर्म संयुक्त

चेतना—३

१ कर्म-चेतना

२ कर्म-फल-चेतना

३ ज्ञान-चेतना

समुद्घात—७

१ वेदना

२ कषाय

३ विक्रिया

४ मारणान्तिक

५ तैजस

६ आहारक

७ केवली

बाह्य क्रिया

१ हिंसा करना

२ झूठ बोलना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

३ चोरी करना
४ मैथुन करना
५ परिग्रह संचय करना

आभ्यंतर क्रिया
१ योग
२ कषाय

पर्याय—२
१ व्यंजन पर्याय
२ अर्थ-पर्याय

व्यंजन पर्याय–२
१ स्वभाव-व्यंजन-पर्याय
२ विभावव्यंजन-पर्याय

अर्थ-पर्याय —२
१ स्वभावअर्थपर्याय
२ विभावअर्थपर्याय

पर्याय
१ समान जातिय पर्याय
२ असमान जातिय पर्याय

जीव के असाधारण भाव
१ औपशमिक
२ क्षायिक
३ क्षायोपशमिक
४ औदयिक
५ पारिणामिक

औपशमिक भाव—२
१ औपशमिक सम्यक्त्व
२ औपशमिक चरित्र

क्षायिक भाव—९
१ क्षायिक सम्यक्त्व
२ क्षायिक चरित्र
३ क्षायिक ज्ञान
४ क्षायिक दर्शन
५ क्षायिक लाभ
६ क्षायिक दान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७ क्षायिक भोग	१ असिद्धत्व
८ क्षायिक उपभोग	पारिणामिक भाव—३
९ क्षायिक वीर्य	१ जीवत्व
क्षायोपशमिक भाव—१८	२ भव्यत्व
७ ज्ञान	३ अभव्यत्व
३ दर्शन	कुल भाव—५३
५ दान आदिक	२ औपशमिक
१ क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	९ क्षायिक
१ क्षायोपशमिक चारित्र	१८ क्षायोपशमिक
१ संयमासंयम	२१ औदयिक
औदयिक भाव—२१	३ पारिणामिक
४ गति	स्कंध—३
४ कषाय	१ स्कन्ध
३ लिंग	२ स्कन्ध देश
६ लेश्या	३ स्कन्ध प्रदेश
१ मिथ्यात्व	स्कंध—४
१ असंयम	१ पृथ्वी
१ अज्ञान	२ अप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

३ तेज	३ सूक्ष्म
४ वायु	४ स्थूल
स्कध — ६	५ संस्थान
१ स्थूल स्थूल	६ भेद
२ स्थूल	७ तमस् (अन्धकार)
३ स्थूल सूक्ष्म	८ छाया
४ सूक्ष्म स्थूल	९ आतप
५ सूक्ष्म	१० उद्योत
६ सूक्ष्म सूक्ष्म	शब्द—२
वर्गणा—५	१ भाषात्मक
१ आहार वर्गणा	२ अभाषात्मक
२ तैजस वर्गणा	भाषात्मक—२
३ भाषा वर्गणा	१ अक्षरात्मक
४ मनो वर्गणा	२ अनक्षरात्मक
५ कार्माण वर्गणा	अभाषात्मक—२
पुद्गल की पर्याय—१०	१ वैस्रसिक (स्वभाविक)
१ शब्द	२ प्रायोगिक
२ बन्ध	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बन्ध—२
१ वैस्रसिक वंध
२ प्रायोगिक वंध

वैस्रसिक बन्ध—२
१ सादि
२ अनादि

प्रायोगिक बन्ध—२
१ पुद्गल विषयक
२ जीव पुद्गल विषयक

सूक्ष्म—२
१ आपेक्षिक सूक्ष्म
२ आत्यन्तिक सूक्ष्म

स्थूल—२
१ आपेक्षिक स्थूल
२ आत्यन्तिक स्थूल

संस्थान — २
१ इत्थंलक्षण
२ अनित्थं लक्षण

भेद—६
१ उत्कर
२ चूर्ण
३ खण्ड
४ चूर्णिका
५ प्रतर
६ अनुचटन

छाया—२
१ तद् वर्णादिक विकारवती
२ प्रतिबिंब मात्र ग्राहिका

मोक्षमार्ग—२
१ व्यवहार मोक्षमार्ग
२ निश्चय मोक्षमार्ग

रत्नत्रय—३
१ सम्यग्दर्शन
२ सम्यग्ज्ञान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ सम्यक् चारित्र

सम्यग्दर्शन—२

१ व्यवहार सम्यग्दर्शन
२ निश्चय सम्यग्दर्शन

सम्यग्ज्ञान—२

१ व्यवहार सम्यग्ज्ञान
२ निश्चय सम्यग्ज्ञान

सम्यक् चारित्र—२

१ व्यवहार सम्यक् चारित्र
२ निश्चय सम्यक् चारित्र

तत्व—७

१ जीव
२ अजीव
३ आस्रव
४ वंध
५ संवर
६ निर्जरा
७ मोक्ष

पदार्थ—९

१ जीव
२ अजीव
३ आस्रव
४ वंध
५ संवर
६ निर्जरा
७ मोक्ष
८ पुण्प
९ पाप

आस्रव—२

१ द्रव्य आस्रव
२ भाव आस्रव

भाव आस्रव—५

१ मिथ्यात्व
२ अविरति
३ प्रमाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ कषाय
५ योग

द्रव्य आश्रव —
१ साम्परायिक आश्रव
२ ईर्यापथ आश्रव

बन्ध-२
१ द्रव्य बन्ध
२ भाव बन्ध

द्रव्य बन्ध-४
१ प्रकृति बन्ध
२ प्रदेश बन्ध
३ स्थिति बन्ध
४ अनुभाग बन्ध

भाव बन्ध-३
१ मिथ्यात्व
२ राग
३ द्वेष

संवर—२
१ द्रव्य संवर
२ भाव संवर

भाव संवर—७
१ गुप्ति
२ समिति
३ धर्म
४ अनुप्रेक्षा
५ परिषह जय
६ चारित्र
७ तप

निर्जरा—२
१ द्रव्य निर्जरा
२ भाव निर्जरा

निर्जरा—२
१ सविपाक निर्जरा
२ अविपाक निर्जरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोक्ष—२
१ द्रव्य मोक्ष
२ भाव मोक्ष

पुण्य—२
१ द्रव्य पुण्य-(६८ पुण्य प्रकृति)
२ भाव पुण्य

पाप—२
१ द्रव्य पाप (१०० पाप प्रकृति)
२ भाव पाप

भाव पाप—२७
४ संज्ञा
३ अशुभ लेश्या
५ इन्द्रिय वशता
४ आर्तध्यान
४ रौद्रध्यान
१ दुःप्रयुक्त ज्ञान
१ मोह
१ प्रमाद बहुलचर्यापरिणति
१ कालुष्यपरिणति
१ विषयलौल्यपरिणति
१ परपरिताप परिणति
१ पर अपवाद परिणति

भाव पुण्य—७
१ प्रशस्त राग परिणति
२ अनुकम्पा परिणति
३ चित्त की अकलुषता
४ चित्त प्रसाद
५ अर्हत्सिद्ध साधु भक्ति
६ व्यवहार चारित्र अनुष्ठान में वासना प्रधान चेष्टा
७ गुरुवों में रसपूर्वक अनुगमन

सत्—३
१ उत्पाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ व्यय
३ ध्रौव्य

सत्ता–२
१ महासत्ता
२ अवांतर सत्ता

महासत्ता–६
१ सत्ता
२ सर्व पदार्थस्थिता
३ सविश्वरुपा
४ अनंतपर्याया
५ एका
६ उत्पाद व्यय ध्रौव्यात्मिका

अवान्तर सत्ता–६
१ असत्ता
२ एक पदार्थस्थिता
३ एक रुपा
४ एक पर्याया
५ अनेका
६ अत्रिलक्षणा

सत् न मानने में दोष–४
१ असत् उत्पत्ति
२ परतः सिद्धि
३ युत सिद्धि
४ सत् का नाश

वस्तु का कार्य क्षेत्र
१ स्व द्रव्य (देश)
२ स्व क्षेत्र (प्रदेश)
३ स्व काल (पर्याय)
४ स्व भाव (गुण)

अभाव–४
१ प्राक् अभाव
२ प्रध्वंस अभाव
३ अन्योन्य अभाव
४ अत्यन्त अभाव

६ द्रव्यों के सामान्य स्वभाव–११
१ अस्ति स्वभाव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

२ नास्ति स्वभाव	६ द्रव्यों के विशेष स्वभाव—१०
३ नित्य स्वभाव	१ चेतन स्वभाव
४ अनित्य स्वभाव	२ अचेतन स्वभाव
५ एक स्वभाव	३ मूर्त स्वभाव
६ अनेक स्वभाव	४ अमूर्त स्वभाव
७ भेद स्वभाव	५ एक प्रदेश स्वभाव
८ अभेद स्वभाव	६ अनेक प्रदेश स्वभाव
९ भव्य स्वभाव	७ विभाव स्वभाव
१० अभव्य स्वभाव	८ शुद्ध
	९ अशुद्ध स्वभाव
११ परम स्वभाव	१० उपचरित स्वभाव

तीसरा अध्याय

लक्षण—२	२ अतिव्याप्ति
१ आत्मभूत लक्षण	३ असंभव
२ अनात्मभूत लक्षण	प्रमाण—२
लक्षण के दोष—३	१ प्रत्यक्ष प्रमाण
१ अव्याप्ति	२ परोक्ष प्रमाण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रत्यक्ष—२
१ सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष
२ पारमार्थिक प्रत्यक्ष

पारमार्थिक प्रत्यक्ष—२
१ विकल पारमार्थिक
२ सकल पारमार्थिक

विकल पारमार्थिक—२
१ अवधि ज्ञान
२ मनः पर्यय ज्ञान

परोक्ष प्रमाण-५
१ स्मृति
२ प्रत्यभिज्ञान
३ तर्क
४ अनुमान
५ आगम

प्रत्यभिज्ञान—२
१ एकत्व प्रत्यभिज्ञान
२ सादृश्य प्रत्यभिज्ञान

अनुमान के अंग-५
१ प्रतिज्ञा
२ हेतु
३ उदाहरण
४ उपनय
५ निगमन

साध्य—३
१ इष्ट
२ अबाधित
३ असिद्ध

हेतु—३
१ केवल अन्वयी हेतु
२ केवल व्यतिरेकी हेतु
३ अन्वय व्यतिरेकी हेतु

उदाहरण-२ या दृष्टांत-२
१ अन्वय दृष्टांत
२ व्यतिरेक दृष्टांत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेत्वाभास-४
१ असिद्ध
२ विरुद्ध
३ अनैकांतिक या व्यभिचारि
४ अकिंचित्कर

अकिंचित्कर हेत्वाभास-२
१ सिद्ध साधन
२ बाधित विषय

बाधित विषय हेत्वाभास-४
१ प्रत्यक्ष बाधित
२ अनुमान बाधित
३ आगम बाधित
४ स्व वचन बाधित

नय-२
१ निश्चय नय
२ व्यवहार नय

निश्चय नय-२
१ आगम निश्चय नय
२ अध्यात्म निश्चय नय

आगम निश्चय नय-२
१ द्रव्यार्थिक आगम निश्चय नय
२ पर्यायार्थिक आगम निश्चय नय

द्रव्यार्थिक आगम निश्चय नय-३
१ नैगम
२ संग्रह
३ व्यवहार

पर्यायार्थिक आगम निश्चय नय-४
१ ऋजुसूत्र
२ शब्द
३ समभिरूढ
४ एवं भूत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नैगम नय–३

१ भूत नैगम नय

१ भावी नैगम नय

१ वर्तमान नैगम नय

संग्रह नय–२

१ सामान्य संग्रह नय

२ विशेष संग्रह नय

व्यवहारनय–२

१ शुद्ध व्यवहार नय

२ अशुद्ध व्यवहार नय

ऋजुसूत्र नय–२

१ स्थूल ऋजुसूत्र नय

२ सूक्ष्म ऋजुसूत्र नय

आगम द्रव्यार्थिक निश्चय नय–७

३ नैगम

२ संग्रह

२ व्यवहार

पर्यायार्थिक आगम निश्चय नय-५

२ ऋजूसूत्र

१ शब्द

१ समभिरूढ

१ एवं भूत

अध्यात्म निश्चय नय–२

१ द्रव्यार्थिक अध्यात्म निश्चय नय

२ पर्यायार्थिक अध्यात्म निश्चय नय

द्रव्यार्थिक अध्यात्म निश्चय नय–१०

१ कर्म उपाधि निर्पेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिक नय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ सत्ता ग्राहक शुद्ध द्रव्यार्थिक नय
३ भेद विकल्प निर्पेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिक नय
४ कर्म उपाधि सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय
५ उत्पाद व्यय सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय
६ भेद कल्पना सापेक्ष अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय
७ अन्वय द्रव्यार्थिक नय
८ स्वद्रव्यादि ग्राहक द्रव्यार्थिक नय
९ पर द्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिक नय
१० परम भाव ग्राहि द्रव्यार्थिक नय

पर्यायार्थिक अध्यात्म निश्चय नय-६

१ अनादि नित्य पर्यायार्थिक नय
२ आदि नित्य पर्यायार्थिक नय
३ अनित्य शुद्ध पर्यायार्थिक नय
४ अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक नय
५ कर्म उपाधि निरपेक्ष अनित्य शुद्ध पर्यायार्थिक नय
६ कर्म उपाधि सापेक्ष अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक नय

व्यवहार नय-३

१ सद्भूत व्यहार नय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ असद्भूत व्यवहार नय
३ उपचरित असद्भूत व्यवहार नय

सद्भूत व्यवहार नय–२
१ शुद्ध सद्भूत व्यवहार नय
२ अशुद्ध सद्भूत व्यवहार नय

असद्भूत व्यवहार नय–३
१ सजाति असद्भूत व्यवहार नय
२ विजाति असद्भूत व्यवहार नय
३ स्वजाति विजाति असद्भूत व्यवहार नय

उपचरित व्यवहार नय–३
१ सजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार नय
२ विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार नय
३ सजाति विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहार नय

कुल नय-३६
७ आगम द्रव्यार्थिक निश्चयनय
५ आगम पर्यायार्थिक निश्चयनय
१० अध्यात्म द्रव्यार्थिक निश्चयनय
६ अध्यात्म पर्यायार्थिक निश्चयनय
८ व्यवहार नय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

निक्षेप-४
१ नाम निक्षेप
२ स्थापना निक्षेप
३ द्रव्य निक्षेप
४ भाव निक्षेप

स्थापना-२
१ तदाकार स्थापना
२ अतदाकार स्थापना

भाव निक्षेप—२
१ आगम भाव निक्षेप
२ नो आगम भाव निक्षेप

द्रव्य निक्षेप-२
१ आगम द्रव्य निक्षेप
२ नो आगम द्रव्य निक्षेप

नो आगम द्रव्य निक्षेप-३
१ ज्ञायक शरीर
२ भावी
३ तद् व्यतिरिक्त

ज्ञायक शरीर नो आगम द्रव्य निक्षेप-३
१ भूत
२ भविष्यत
३ वर्तमान

भूत शरीर—३
१ च्युत
२ च्यावित
३ त्यक्त

तद्व्यतिरिक्त नोआगम द्रव्य निक्षेप—२
१ कर्म
२ नो कर्म

दोष—८
१ संकर
२ व्यतिकर
३ विरोध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ वैयधिकरण्य
५ अनवस्था
६ संशय
७ अप्रतिपत्ति
८ अभाव

संबन्ध — ९
१ अविनाभाव संबन्ध
२ संयोग संबन्ध
३ परिणामपरिणामि संबन्ध
४ श्रद्धा श्रद्धेय सम्बन्ध
५ ज्ञानज्ञेय संबन्ध
६ चारित्र चर्या संबन्ध
७ सत्यार्थ संबन्ध
८ असत्यार्थ संबन्ध
९ सत्यासत्यार्थ संबन्ध

अनेकान्त भंग—७
१ स्यात् अस्ति
२ स्यात् नास्ति
३ स्यात् अस्तिनास्ति
४ स्यात् अवक्तव्य
५ स्यात् अस्ति अवक्तव्य
६ स्यात् नास्ति अवक्तव्य
७ स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्य

चौथा अध्याय

देव—४
१ भवनवासी
२ व्यंतर
३ ज्योतिष्क
४ वैमानिक

भवनवासी—१०
१ असुर कुमार
२ नागकुमार
३ विद्युत्कुमार
४ सुपर्णकुमार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

५ अग्निकुमार	३ ग्रह
६ वात कुमार	४ नक्षत्र
७ स्तनितकुमार	५ तारे
८ उदधिकुमार	**वैमानिक-२**
९ द्वीप कुमार	१ कल्पोपपन्न
१० दिक् कुमार	२ कल्पातीत
व्यंतर-८	**कल्पोपपन्न-१६**
१ किन्नर	१ सौधर्म
२ किंपुरुष	२ ऐशान
३ महोरग	३ सानतकुमार
४ गंधर्व	४ माहेन्द्र
५ यक्ष	५ ब्रह्म
६ राक्षस	६ ब्रम्होत्तर
७ भूत	७ लान्तव
८ पिशाच	८ कापिष्ट
ज्योतिष्क-५	९ शुक्र
१ सूर्य	१० महाशुक्र
२ चंद्रमा	११ सतार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ सहस्रार
१३ आनत
१४ प्राणत
१५ आरण
१६ अच्युत

कल्पातीत—२३
९ ग्रैवेयक
९ अनुदिश
५ पंचोत्तर

पंचोत्तर—५
१ विजय
२ वैजयन्त
३ जयन्त
४ अपराजित
५ सर्वार्थसिद्ध

नरक—७
१ रत्न प्रभा
२ शर्करा प्रभा
३ बालुका प्रभा
४ पंक प्रभा
५ धूम प्रभा
६ तमः प्रभा
७ महातमः प्रभा

नरक—७
१ घंमा (घमा)
२ वंशा
३ मघा
४ अंजना
५ अरिष्टा
६ मघवी
७ माघवी

जम्बूद्वीप के खण्ड—७
१ भरत
२ हैमवत
३ हरि
४ विदेह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

५ रम्यक
६ हैरण्यव्रत
७ ऐरावत

द्वीप
१ जम्बू द्वीप
२ धातकी खंड
३ पुष्कर द्वीप
अन्त का स्वंयभूरमण द्वीप

समुद्र
१ लवण समुद्र
२ कालोदधि समुद्र
अन्त का स्वयंभूरमण समुद्र

कर्मभूमि—१५
५ भरत
५ ऐरावत
५ विदेह

उत्तम भोगभूमि—१०
५ देव कुरु
५ उत्तर कुरु

मध्यम भोगभूमि—१०
५ हरि
५ रम्यक

जघन्य भोगभूमि—१०
५ हैमवत
५ हैरण्यवत

कुभोगभूमि
लवण समुद्र और कालोदधि समुद्र में ९६ अन्तर्द्वीप

लोक—३
१ अधो लोक
२ मध्य लोक
३ उर्ध्व लोक

काल चक्र—६
१ सुषमासुषमा
२ सुषमा
३ सुषमा दुःषमा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ दुःषमा सुषमा	३२ व्यंतर
५ दुःषमा	२४ कल्पवासी
६ दुःसमादुःषमा	२ ज्योतिष्क (सूर्य–चन्द्रमा)
इन्द्र–१००	१ चक्रवर्ती
४० भवनवासी	१ सिंह

पांचवां अध्याय

कर्म–८
१ ज्ञानावरण
२ दर्शनावरण
३ वेदनीय
४ मोहनीय
५ आयु
६ नाम
७ गोत्र
८ अन्तराय

ज्ञानावरण–५
१ मति ज्ञानावरण
२ श्रुत ज्ञानावरण
३ अवधि ज्ञानावरण
४ मनः पर्यय ज्ञानावरण
५ केवल ज्ञानावरण

दर्शनावरण–९
१ चक्षुः दर्शनावरण
२ अचक्षुः दर्शनावरण
३ अवधि दर्शनावरण
४ केवल दर्शनावरण
५ निद्रा
६ निद्रा–निद्रा
७ प्रचला
८ प्रचला-प्रचला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

९ स्त्यानगृद्धि

वेदनीय–२

१ साता वेदनीय

२ असाता वेदनीय

मोहनीय–२

१ दर्शन मोहनीय

२ चारित्र मोहनीय

दर्शनमोहनीय–३

१ मिथ्यात्व

२ सम्यग्मिथ्यात्व

३ सम्यक् प्रकृति मिथ्यात्व

चारित्रमोहनीय–२५

४ अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ

४ अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान-माया-लोभ

४ प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ

४ संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ

१७ हास्य

१८ रति

१९ अरति

२० शोक

२१ भय

२२ जुगुप्सा

२३ स्त्रीवेद

२४ पुरुष वेद

२५ नपुंसक वेद

आयु–४

१ नरकायु

२ तिर्यंचायु

३ देवायु

४ मनुष्यायु

गोत्र–२

१ नीच गोत्र

२ उच्च गोत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तराय—५
१ दानांतराय
२ लाभान्तराय
३ भोगांतराय
४ उपभोगांतराय
५ वीर्यअंतराय

नाम—४२
१ गति
२ जाति
३ शरीर
४ अंगोपांग
५ निर्माण
६ बधन
७ संघात
८ संस्थान
९ संहनन
१० स्पर्श
११ रस
१२ गंध
१३ वर्ण
१४ आनुपूर्वी
१५ अगुरलघु
१६ उपघात
१७ परघात
१८ आताप
१९ उद्योत
२० उच्छ्वास
२१ विहायोगति
२२ प्रत्येकशरीर
२३ साधारणशरीर
२४ त्रस
२५ स्थावर
२६ सुभग
२७ दुर्भग
२८ सुस्वर
२९ दुःस्वर
३० शुभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

३१ अशुभ
३२ सूक्ष्म
३३ स्थूल
३४ पर्याप्ति
३५ अपर्याप्ति
३६ स्थिर
३७ अस्थिर
३८ आदेय
३९ अनादेय
४० यशःकिर्ति
४१ अयशःकिर्ति
४२ तीर्थंकर

गति—४
१ नरकगति
२ तिर्यंचगति
३ देवगति
४ मनुष्यगति

जाति—५
१ एक इन्द्रिय जाति
२ दो इन्द्रिय जाति
३ तीन इन्द्रिय जाति
४ चार इन्द्रिय जाति
५ पांच इन्द्रिय जाति

शरीर—५
१ औदारिक
२ वैक्रियिक
३ आहारक
४ तैजस
५ कार्माण

अंगोपांग - ३
१ औदारिक
२ वैक्रियिक
३ आहारक

बन्धन—५
१ औदारिक
२ वैक्रियिक
३ आहारक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ तैजस
५ कार्माण

संघात—५
१ औदारिक
२ वैक्रियिक
३ आहारिक
४ तैजस
५ कार्माण

संस्थान—६
१ समचतुस्त्र
२ न्याग्रोधपरिमंडल
३ स्वाति
४ कुब्जक
५ वामन
६ हुंडक

संहनन—६
१ वज्रवृषभनाराच
२ वज्रनाराच
३ नाराच
४ अर्द्धनाराच
५ कीलक
६ असंप्राप्तासृपाटिका

स्पर्श—८
१ हल्का
२ भारी
३ रुखा
४ चिकना
५ कड़ा
६ नर्म
७ ठंडा
८ गर्म

रस—५
१ खट्टा
२ मीठा
३ कडुवा
४ कषायला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ चर्परा	**नाम कर्म–९३**
गंध–२	२१ के ७२ भेद
१ सुगंध	१० के २० भेद
२ दुर्गंध	१ तीर्थंकर
वर्ण–५	**घाति कर्म–४**
१ काला	१ ज्ञानवर्ण
२ पीला	२ दर्शनावरण
३ नीला	३ मोहनीय
४ सफेद	४ अन्तराय
५ लाल	**अघाति कर्म–४**
आनुपूर्वी–४	१ वेदनीय
१ नरकगत्यानुपूर्वी	२ आयु
२ तिर्यंचगत्यानुपूर्वी	३ नाम
३ मनुष्यगत्यानुपूर्वी	४ गोत्र
४ देवगत्यानुपूर्वी	**सर्वघाति प्रकृति–२१**
विहायो गति–२	१ केवलज्ञानावरण
१ प्रशस्तविहायोगति	१ केवलदर्शनावरण
२ अप्रशस्तविहायोगति	५ निद्रा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ अनन्तानुबन्धी कषाय
४ अप्रत्याख्यानावरण कषाय
४ प्रत्याख्यानावरण कषाय
१ मिथ्यात्व
१ सम्यग्मिथ्यात्व

देशघाति प्रकृति—२६
४ ज्ञानावरण की
३ दर्शनावरण की
५ अंतराय की
४ संज्वलनकषाय
९ नो कषाय
१ सम्यक्प्रकृति मिथ्यात्व

क्षेत्र विपाकी—४
४ आनुपूर्वी

भवविपाकी—४
४ आयु

जीव विपाकी—७८
४७ घातिया
२ गोत्र
२ वेदनिय
२७ नामकर्म (४ गति, ५ जाति, १ तीर्थंकर, १ उच्छ्वास, ८ जोड़े प्रत्येक शरीर और शुभ को छोड़ कर)

पुद्गल विपाकी—६२
सब नाम कर्म की ९३ में से २७ जीवविपाकी और ४ क्षेत्र विपाकी घटा कर (क्षेत्र)

पाप प्रकृति—१००
४७ घातिया
१ असाता वेदनीय
१ नीच गोत्र १ नरकायु
५० नाम कर्म (जाति आदि की ४, संस्थान अंत के ५, संहनन अंत के ५, स्पर्शादिक २०, जोड़े की अशुभ ११, नरकगति १, नरकगत्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

नुपूर्वी १, तिर्यंचगति १, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी १, उपघात १)

पुण्य प्रकृति—६८

सब १४८ में से पाप प्रकृति १०० घटाकर बाकी रही ४८ में से स्पर्शादिक २० मिलाने से पुण्य प्रकृति ६८ होती हैं।

प्रकृति

कर्म—८

उत्तर प्रकृति—१४८

घाति कर्म—४

अघाति कर्म—४

घाति प्रकृति—४७

अघाति प्रकृति—१०१

सर्वघाति—२१

देशघाति—२६

जीव विपाकी—७८

पुद्गल विपाकी—६२

भवविपाकी—४

क्षेत्र विपाकी—४

पाप प्रकृति—१००

पुण्य प्रकृति—६८

सत्त्व योग्य प्रकृति—१४८

बन्ध योग्य प्रकृति १२० (१४८ में से ५ बन्धन, ५ शरीर, १६ स्पर्शादिक, १ मिथ्यात्व, १ साम्यग्मिथ्यात्व घटाने से)

बंध योग्य प्रकृति—१२०

उदय योग्य प्रकृति—१२२

उत्कृष्ट स्थिति

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अंतराय की ३० कोड़ा कोड़ी सागर।

दर्शन मोहनीय की ७० और चारित्र मोहनीय की ४० कोड़ा कोड़ी सागर।

नाम गोत्र की २० कोड़ा कोड़ी सागर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव और नरकायु की ३३ सागर।

मनुष्य और तिर्यंच की ३ पल्य

जघन्य स्थिति

वेदनीय की १२ मुहूर्त. नाम गोत्र की ८ मुहूर्त और बाकी सबकी अंतर्मुहूर्त।

कर्म की १५ अवस्था

१ सत्ता
२ उदय
३ उदीर्णा
४ अन्तःकरणरुपउपशम
५ सत् अवस्थारुपउपशम
६ क्षय
७ उदयाभावीक्षय
८ क्षयोपशम
९ बन्ध
१० उत्कर्षण
११ अपकर्षण
१२ संक्रमण
१३ विसंयोजन
१४ निधत्ति
१५ निकाचित

कर्मों की ४ अवस्था

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय की दो ही अवस्था होती है। (१) क्षयोपशम (२) क्षय

अघाति ४ कर्मों की दो ही अवस्था होती है (१) उदय (२) क्षय

दर्शनमोहनीय, चारित्र मोहनीय की चारों अवस्था होती हैं (१) उदय (२) उपशम (३) क्षय (४) क्षयोपशम।

ज्ञानावरण के आस्रव के कारण—१८

१ प्रदोष भाव (ईर्षा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

२ निह्नव भाव (छिपाना)
३ मात्सर्य भाव (डाह)
४ अंतराय (ज्ञान अभ्यास में विघ्न डालना)
५ आसादन (रोक देना)
६ अपघात (दोष लगाना)
७ उत्सूत्र कथन
८ तत्वउपदेश सुनने में अनादर
९ ज्ञानअभ्यास में आलस्य रखना
१० शास्त्र बेचना
११ अपने को बहुश्रुत मानकर अभिमान से मिथ्या उपदेश देना
१२ निषिद्ध समयों में पढ़ना
१३ आचार्य उपाध्याय के विरुद्ध रहना
१४ तत्त्वों में अश्रद्धा रखना
१५ तत्त्वो का अनुचिंतन न करना
१६ सर्वज्ञ शासन प्रसार में बाधा डालना
१७ बहुश्रुत ज्ञानियों का अपमान करना
१८ तत्त्वअभ्यास में शठता करना

दर्शनावरण के आस्रव के कारण—१३

१ प्रदोष (ईर्षा)
२ निह्नव (छिपाना)
३ मात्सर्य (डाह)
४ अंतराय (देखने में विघ्न डालना)
५ आसादन (रोक देना)
६ उपघात (दोष लगाना)
७ किसी की आँखे निकलवा लेना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ बहुत सोना	१० ताड़ना
२ दिन में सोना	११ दमन करना
३ नास्तिक्य वासना	१२ तर्जन (डराना)
४ सम्यग्दृष्टि को दोष लगाना	१३ भर्त्सन (तरासना)
५ कुतीर्थों की प्रशंसा	१४ शीघ्र विश्वास करना
६ तपस्वियों से ग्लानी करना	१५ पाप कर्म से आजीविका
असातावेदनीय के आस्रव के कारण—२४	१६ वक्र स्वभावता (स्वभाव का टेढ़ापन)
	१७ शस्त्र दान करना
१ दुःख	१८ विश्वास घात करना
२ शोक	१९ विष मिश्रण (जहर मिलाना)
३ पश्चाताप	२० सांकल, रस्सी, जाल आदि पशु पक्षी पकड़ने की चीजें देना।
४ आक्रंदन (विलाप)	
५ वध	
६ परिदेवन (बुरी तरह रोना)	२१ धर्म का विध्वंस (घात) करना
७ परपैशुन्य (दूसरों की चुगली खाना)	२२ धर्म में विघ्न डालना
८ छेदना	२३ तपस्वियों की निंदा करना
९ भेदना	२४ शीलव्रत का छोड़ना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

सातावेदनीय के आस्रव के कारण—१५

१ प्राणी दया
२ व्रतियों पर विशेष अनुकंपा
३ दान देना
४ संरागसंयम (मुनिव्रत पालना)
५ क्षमा धारण करना
६ आत्म शौच को पालना
७ तपश्चरण करना
८ शील धारण करना
९ सत्य बोलना
१० इन्द्रिय दमन करना
११ वैयावृत्य (धर्मात्माओं की सेवा में उपस्थित रहना)
१२ विनीत (विनययुक्त रहना)
१३ जिन पूजन करना
१४ आर्जव (परिणाम सरल रखना)
१५ संयमासंयम (श्रावक व्र पालना)

दर्शनमोहनीय के आस्र के कारण—८

१ केवली की झूंठी नि करना
२ श्रुत (शास्त्र) ,,
३ संघ (साधु) ,,
४ धर्म ,,
५ देवों ,,
६ तिर्थंकरों ,,
७ मोक्ष मार्ग को दुषित क राना
८ असत्य मोक्षमार्ग को सच्च बताना

चारित्रमोहनीय के आस्र के कारण—१

१ क्रोधादि कषायों की तीव्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5209

ायु के आस्रव के
ारण—९

सराग संयम
संयमासंयम
अकाम निर्जरा
बाल तप
मंद कषायता
सुधर्म श्रवण
दान
आयतन सेवन
सम्यक्त्व

रकायु के आस्रव के
ारण—१८

उत्कृष्ट मान
तीव्र क्रोध
मिथ्यात्व
तीव्र लोभ
सदा निर्दयी बने रहना

६ अजस्त्रव
७ सदा जीव घात करना
८ निरन्तर झूठ बोलना
९ नित्य परधन हरण
१० नित्य मैथुन सेवन
११ नित्य काम भोग अभिलाषाओं में अतिलीन रहना
१२ जिन भगवान को आसादना
१३ साधु भेदन
१४ बिल्ली, कुत्ते, मुर्गे इत्यादि पापी प्राणियों का पालना
१५ शीलव्रत रहित बने रहना
१६ आरम्भ और परिग्रह को अति बढ़ाना
१७ कृष्ण लेश्या परिणति
१८ रौद्रध्यान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

तिर्यंच आयु के आस्रव के कारण—१४

१ माया
२ शील का न पालना
३ व्रतों का न रखना
४ मिथ्यात्व
५ दूसरों को ठगना
६ मिथ्यादृष्टियों के धर्मों का उपदेश देना
७ कृत्रिम (बनावटी) अगर कपूर कुंकुम का बनाना
८ खोटी गज, तराजु, बाट वगैरह रखना
९ नकली सोना मोती वगैरह बनाना
१० किसी चीज के वर्ण गन्ध रस, स्पर्श का बदलना
११ दूध, घी, मठा इत्यादि में अन्य वस्तु विमिश्रण
१२ वचन या शरीर की क्रियाओं से दूसरों में घबराहट पैदा करना
१३ कापोत, नीललेश्या
१४ तीव्र आर्तध्यान

मनुष्य आयु के आस्रव के कारण—९

१ अल्प आरम्भ
२ अल्प परिग्रह
३ स्वभाव ऋजुता (परिणाम सरलता)
४ गुरु पूजन व विनय
५ शील का पालना
६ अल्प संक्लेशता
७ दान देना
८ प्राणी घात को छोड़ देना
९ स्वभाव मार्दव (कोमलता)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशुभ नाम कर्म के आस्रव के कारण–१८

१ मन वचनकाय की वक्रता
२ झगड़ालू स्वभाव
३ मिथ्यात्व
४ झूठे लेख बनाना
५ झूठी गवाही देना
६ चुगली खाना
७ चित्त अशांत रखना
८ किसी को विष दे देना
९ ईंटों का चुने का भट्टा पजाया लगाना
१० जंगल में आग लगा देना
११ देव प्रतिमा के स्थान का नाश करना
१२ बगीचा उजाड़ना
१३ सभा आश्रय स्थानादि का भंग कर देना
१४ देव प्रतिमा के लिये रखे हुवे गन्ध पुष्पमाला धूप इत्यादि चीजों को चुराना
१५ अति तीव्र क्रोधादि कषाय रखना।
१६ पाप कर्मों से जीविका रखना
१७ असुहावना कठोर वचन बोलना
१८ किसी के सौभाग्य का नाश करना या सौभाग्य नहीं होने देना।

शुभ नाम कर्म के आस्रव के कारण–३

१ संसार से डरते रहना
२ कभी किसी के साथ झगड़ा विवाद न करना।
३ तीनों योगों को सरल रखना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकर प्रकृति के आस्रव के कारण—१६

१ दर्शन विशुद्धि
२ विनय सम्पन्नता
३ व्रतों में अतिचार रहित प्रवृत्ति
४ निरन्तर तत्त्व अभ्यास
५ संवेग (संसार से डरना)
६ शक्तितः त्याग
७ शक्तितः तप
८ साधुसमाधि
९ वैयावृत्यकरण
१० अर्हद्भक्ति
११ आचार्य भक्ति
१२ बहुश्रुत भक्ति
१३ प्रवचन भक्ति
१४ आवश्यक अपरिहाणि (आवश्यक क्रियाओं का न छोड़ना)
१५ मार्ग प्रभावना
१६ प्रवचन वत्सलत्व (साधर्मियों से प्रीति)

नीच गोत्र के आस्रव के कारण—४

१ गुण न रहते हुए भी अपने उन गुणों का वर्णन करना
२ दूसरों में जो गुण हो उन्हें न कहकर दबाने की इच्छा करना।
३ अपनी प्रशंसा करना
४ दूसरों की निंदा करना

उच्च गोत्र के आस्रव के कारण—३

१ नीचैर्वृत्ति (गुणों में अधिक ऐसे गुरुजनों के साथ नम्रता से रहना)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ अनुत्सेक (घमण्ड व अहंकार न करना)	३ नीच गोत्र से विपरित कार्य करने से

अन्तराय कर्म के आस्रव के कारण—११

१ तपस्वी-गुरु-प्रतिमाओं की पूजा का विध्वंस करना
२ अनाथ-दीन-कृपणों को भिक्षा देना बन्द कर देना
३ किसी को बांध डालना
४ किसी को रोकना
५ किसी के नाक, कान आदि का काट लेना या छेद देना
६ नैवेद्य देव को समर्पण कर देने पर फिर से वह लोभवश होकर उठा लेना
७ निर्दोष-निष्पाप-भोगोपभोग के उपकरणसाधन छोड़ देना
८ प्राणियों का वध करना
९ दान-लाभ-भोग-उपभोग-वीर्य प्राप्ति में विघ्न डालना
१० ज्ञानाभ्यास का निषेध करना
११ धर्म में विघ्न डालना

सत्ता के नियम

१ तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता वाला जीव दूसरे, तीसरे गुण स्थान को स्पर्श नहीं करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ आहारक शरीर और आहरक अंगोपांग की सत्ता वाला जीव दूसरे गुणस्थान को स्पर्श नहीं करता है।

बन्ध के नियम

१ मिथ्यात्व की प्रधानता से १६ प्रकृति का वन्ध होता है।

२ अनन्तानुबन्धी कषाय उदय जनित अविरति से २५ प्रकृति का वन्ध होता है।

३ अप्रत्याख्यानावरण कषाय उदय जनित अविरति से १० प्रकृति का बन्ध होता है।

४ प्रत्याख्यानावरण कषाय उदय जनित अविरति से ४ प्रकृति का वन्ध होता है।

५ संज्वलन के तीव्र उदय जनित प्रमाद से ६ प्रकृति का बन्ध होता है।

६ संज्वलन और नो कषाय के मन्द उदय से ५८ प्रकृति का वन्ध होता है।

७ योग से एक साता वेदनीय का वन्ध होता है।

८ तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध सम्यक्दृष्टि से ही होता है।

९ आहारक शरीर आहारक अंगोपांग का वन्ध सातवें गुणस्थान से ही होता है।

१० तीसरे गुण स्थान में किसी भी आयु का वन्ध नहीं होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदय के नियम—१६

१ तीर्थंकर प्रकृति का उदय तेरहवें व १४ गुण स्थान मेंही होता है।
२ आहारक शरीर और आहारक अंगोपांग का उदय छटे गुण स्थान में ही होता है।
३ सम्यग्मिथ्यात्व का उदय तीसरे गुण स्थान में ही होता है।
४ सम्यक् प्रकृति का उदय चौथे से ७ वे गुणस्थान तक गुणस्थान ही होता है।
५ नरकगत्यानुपूर्वी का उदय दूसरे गुणस्थान में नहीं होता।
६ चौथे गुणस्थान में चारों आनुपूर्वी का उदय होता है।
७ विग्रह गति में पहला, दूसरा और चौथा यह तीन गुणस्थान ही होते हैं।
८ दूसरा गुणस्थान गिरते समय ही होता है।
९ दूसरा गुणस्थान वाला जीव मरकर नरक नहीं जाता।
१० पहला गुणस्थान एक मिथ्यात्व और चार अनन्तानुवन्धी के उदय से होता है।
११ दूसरा गुणस्थान ४ अनन्तानुवन्धी के उदय से होता है।
१२ तीसरा गुणस्थान सम्यग्मिथ्यात्व के उदय से होता है।
१३ चौथा गुणस्थान सात के उपशम, क्षय या एक सम्यक्प्रकृति के उदय से होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४ पांचवा गुणस्थान चारित्र मोहनीय की १७, छटा १३ के तीव्रोदय सातवां १३ के मंद उदय, आठवां नववां १३ के अतिमन्द उदय, दसवां सूक्ष्म लोभ के उदय से होता है।

१५ ग्यारवां मोहनीय के उपशम और बारवां मोहनीय के क्षय से होता है।

१६ तेरवां घातिकर्मों के क्षय से होता है।

गुणस्थानों में बन्ध योग्य प्रकृति

पहले में ११७ का=१२०-३ (१. आहारक शरीर २. आहारक अंगोपांग ३. तिर्थंकर) बन्ध होता है।

दूसरे में १०१ का=११७-१६ व्युच्छति

तीसरे में ७४ का=१०१-२५ व्युच्छति-२ मनुष्यायु, देवायु।

चौथे में ७७ का=७१+३ मनुष्यायु, देवायु, तीर्थंकर।

पांचवें में ६७ का=७७-१० व्युच्छति।

छटे में ६३ का=६७-४ व्युच्छति।

सातवें में ५९ का=६३-६ व्युच्छति+२ आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग। ८ वे में ५८, ९वे में २२, १० वे १७। ग्यारवें, बारवें और तेरवें में एक सातावेदनीय का बन्ध होता है। (५९-५८ व्युच्छति)

चौदवें में बन्ध का अभाव है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्वयोग्य प्रकृति

पहले में अनादि मिथ्यादृष्टि को १४३ और सादि को १४८ की सत्ता है।

दूसरे में १४५ की सत्ता है।

तीसरे में १४७ की सत्ता है।

चौथे में १४८ की और क्षायिक को १४१ की सत्ता है।

पांचवें में १४७ की और क्षायिक को १४० की सत्ता है।

छटे में १४६ की और क्षायिक को १३९ की सत्ता है।

सातवें में १४६ की और क्षायिक को १३९ की सत्ता है।

आठवें, नववें, दसवें और ग्यारवें में उपशम श्रेणी में द्वितीय उपशम सम्यग्दृष्टि को १४२ की और क्षायिक को १३९ की सत्ता है।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि को क्षपक श्रेणी में आठवें, नववें में १३८ की, दसवें में १०२ की, बारवें में १०१ की, तेरवें में ८५ की और चौदवें में ७२ और १३ की सत्ता है।

उदय योग्य प्रकृति

पहले में ११७ का (१२२–५ सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक् प्रकृति, आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग, तीर्थंकर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूसरे में १११ का (११७–५ व्युच्छति–१ करकगत्यानुपूर्वी)

तीसरे में १०० का (१११–९ व्युच्छति–३ आनुपूर्वी+१ सम्यग्मिथ्यात्व) उदय होता है।

चौथे में १०४ का (१००–१ व्युच्छति+४ आनुपूर्वी+१ सम्यक्‍प्रकृति) उदय होता है।

पांचवें में ८७ का (१०४–१७ व्युच्छति) उदय होता है।

छटे में ८१ का (८७–८ व्युच्छति+२ आहारक शरीर, आहारक अंगापांग) उदय होता है।

सातवें में ७६ का (८१–५ व्युच्छति) उदय होता है।

आठवें में ७२ का (७६–४ व्युच्छति) उदय होता है।

नववें में ६६ का (७२–६ व्युच्छति) उदय होता है।

दसवें में ६० का (६६–६ व्युच्छति) उदय होता है।

ग्यारवें में ५९ का (६०–१ व्युच्छति) उदय होता है।

बारवें में ५७ का (५९–२ व्युच्छति) उदय होता है।

तेरवें में ४२ का (५७–१६ व्युच्छति+१ तीर्थंकर) उदय होता है।

चौदवें में १२ का (४२–३० व्युच्छति) उदय होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छठा अध्याय

लब्धि—५

१ क्षयोपशम लब्धि
२ विशुद्धि लब्धि
३ देशना लब्धि
४ प्रायोग्य लब्धि
५ करण लब्धि

सम्यक्त्व

सच्चे देव, शास्त्र गुरु की श्रद्धा।

सम्यक्त्व

१ प्रशम
२ संवेग
३ अनुकम्पा
४ अस्तिक्य

सम्यक्त्व—२

१ सराग सम्यक्त्व
२ वीतराग सम्यक्त्व

सम्यक्त्व—२

१ निसर्गज सम्यक्त्व
२ अधिगजम सम्यक्त्व

सम्यक्त्व—१०

१ आज्ञा सम्यक्त्व
२ मार्ग सम्यक्त्व
३ उपदेश सम्यक्त्व
४ सूत्र सम्यक्त्व
५ बीज सम्यक्त्व
६ संक्षेप सम्यक्त्व
७ विस्तार सम्यक्त्व
८ अर्थ सम्यक्त्व
९ अवगाढ सम्यक्त्व
१० परमावगाढ़ सम्यक्त्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक्त्व के अंग–८	मद–८
१ निः शंकित	१ ज्ञान
२ निः कांक्षित	२ पूजा
३ निर्विचिकित्सा	३ कुल
४ अमूढ़ दृष्टि	४ जाति
५ उपगूहन व उपवृंहण	५ बल
६ स्थितिकरण	६ ऋद्धि
७ वात्सल्य	७ तप
८ प्रभावना	८ शरीर
भय–७	**मूढता–३**
१ इस लोक का भय	१ देव मूढ़ता
२ परलोक का भय	२ गुरु मूढ़ता
३ मरण भय	३ लोक मूढ़ता
४ वेदना भय	**अनायतन–६**
५ अनरक्षा भय	१ कुगुरु
६ अगुप्ति भय	२ कुदेव
७ अकस्मात् भय	३ कुधर्म
	तीन इनके सेवक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म्यक्त्वी कहां-कहां नहीं जाता

नरक में नहीं जाता, यदि पहले नरकायु न बन्धी हो
तिर्यंच में नहीं जाता, यदि पहले आयु बन्धी हो तो भोग भूमि का पुल्लिंग ५ इन्द्रिय संज्ञी तिर्यंच ही होता है।
स्त्री नपुंसक में नहीं जाता
भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषि देवों में नहीं जाता केवल वैमानिक पुल्लिंग देव ही होता है।

म्यक्त्व के अतिचार—५

१ शंका
२ कांक्षा
३ विचिकित्सा
४ अन्य दृष्टि प्रशंसा
५ अन्य दृष्टि संस्तवन

क्षयोपशम सम्यक्त्व के दोष—३

१ चल
२ मल
३ अगाढ

सम्यक्त्व का समय

१ औपशमिक का अंतर्मुहूर्त
२ क्षायोपशमिक का अंतर्मुहूर्त से ६६ सागर।
३ क्षायिक का सादि अनन्त
४ दूसरे गुणस्थान का समय एक समय से ६ आवली है

सच्चा देव

सर्वज्ञ, वीतरागी और हितोपदेशी को कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सच्चा गुरु

परिग्रह आरम्भ और हिंसा से रहित तथा ज्ञान, ध्यान, और तप में लवलीन को कहते हैं।

सच्चा शास्त्र

जो सच्चे देव का कहा हुआ हो।

अनुयोग—४

१ प्रथमानुयोग
२ करणानुयोग
३ चरणानुयोग
४ द्रव्यानुयोग

सम्यग्ज्ञान के अंग—८

१ शब्दाचार
२ अर्थाचार
३ उभयाचार
४ कालाचार
५ विनयाचार
६ उपधानाचार
७ बहुमानाचार
८ अनिन्हवाचार

मूलगुण—८

१ मद्य त्याग
२ मांस त्याग
३ मधु त्याग
४ वड़ त्याग
५ पीपर त्याग
६ ऊमर त्याग
७ कठूमर त्याग
८ पाकर त्याग

अथवा

१ मद्य त्याग
२ मांस त्याग
३ मधु त्याग
४ ५ उदम्बर फल त्याग
५ रात्रि भोजन त्याग
६ नित्य देव वन्दना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७ जीव दया पालन
८ जल छानकर पीना

व्यसन—७

१ जूआ खेलना
२ चोरी
३ मांस
४ मद्य
५ वेश्या सेवन
६ पर स्त्री सेवन
७ शिकार

अनर्थ—१७

१ कुगुरू
२ कुदेव
३ कुरूप
४ अनर्थ दण्ड
५ अधमस व्यापार
६ द्यूत
७ मांस
८ मधु
९ वेश्या
१० चोरी
११ परतिय
१२ हिंसादान
१३ शिकार
१४ त्रस हिंसा
१५ स्थूल असत्य
१६ बिनछान्या जल
१७ निशि आहार

अभक्ष्य के नियम—५

१ त्रस घात
२ बहुस्थावर घात
३ प्रमाद जनक
४ अनिष्ट कारक
५ अनुपसेव्य

अभक्ष्य—२२

१ ओला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ घोरबड़ा
३ निशी भोजन
४ वहुवीजा
५ वेंगन
६ संधान
७ बड़
८ पीपर
९ ऊमर
१० कठूमर
११ पाकर
१२ अजान फल
१३ कन्दमूल
१४ माटी
१५ विष
१६ आमिष
१७ मधु
१८ माखन
१९ मदिरापान
२० तुच्छ फल
२१ तुषार
२२ चलित रस

शल्य—३

१ मिथ्या शल्य
२ माया शल्य
३ निदान शल्य

अणुव्रत—५

१ अहिंसा अणुव्रत
२ सत्य अणुव्रत
३ अचौर्य अणुव्रत
४ ब्रह्मचर्य अणुव्रत
५ परिग्रह परिमाण अणुव्रत

गुणव्रत—३

१ दिग्व्रत
२ देशव्रत
३ अनर्थ दंडव्रत

शिक्षाव्रत—४

१ भोगोपभोग परिमाण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ सामायिक
३ प्रोषधोपवास
४ अतिथि संविभाग

हिंसा—४

१ संकल्पी हिंसा
२ आरंभी हिंसा
३ उद्यमी हिंसा
४ विरोधी हिंसा

अहिंसाणुव्रत के अतिचार-५

१ वध
२ वन्ध
३ छेद
४ अतिभार आरोपण
५ अन्नपान निरोध

अहिंसाणुव्रत की भावना—५

१ मनो गुप्ति
२ वचन गुप्ति
३ इर्या समिति
४ आदान निक्षेपण समिति
५ आलोकित पान भोजन

सत्य अणुव्रत के अतिचार—५

१ मिथ्या उपदेश
२ रहोभाख्यान
३ कूटलेख क्रिया
४ न्यासापहार
५ साकार मंत्र भेद

सत्य अणुव्रत की भावना-५

१ क्रोध त्याग
२ लोभ त्याग
३ भय त्याग
४ हास्य त्याग
५ अनुवीचि भाषण

अचौर्य अणुव्रत के अतिचार—५

१ चोर प्रयोग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ चौरार्थ आदान
३ विरुद्ध राज्यातिक्रम
४ हीनाधिक मानोन्मान
५ प्रतिरूपक व्यवहार

अचौर्य अणुव्रत की भावना–५

१ शून्यागारवास
२ विमोचितावास
३ परोपरोधाकरण
४ भैक्ष्य शुद्धि
५ सधर्माविसंवाद

कुशीलत्याग के अतिचार-५

१ परविवाहकरण
२ इत्वरिका परिग्रहीता गमन
३ इत्वरिका अपरिग्रहीता गमन
४ अनंगक्रीड़ा
५ कामतीव्राभिनिवेश

कुशील त्याग की भावना-५

१ स्त्री राग कथा श्रवण त्याग
२ तन्मनोहरांग निरीक्षण त्याग
३ पूर्वरतानुस्मरण त्याग
४ वृष्येष्ट रस त्याग
५ स्वशरीर संस्कार त्याग

बाह्य परिग्रह–१०

१ क्षेत्र
२ वास्तु
३ हिरण्य
४ सुवर्ण
५ धन
६ धान्य
७ दासी
८ दास
९ वस्त्र
१० बर्तन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तर परिग्रह–१४

१ मिथ्यात्व
२ क्रोध
३ मान
४ माया
५ लोभ
६ हास्य
७ रति
८ अरति
९ शोक
१० भय
११ जुगुप्सा
१२ स्त्रीवेद
१३ पुरुषवेद
१४ नपुंसक वेद

परिग्रह परिमाणुव्रत के अतिचार–५

१ प्रयोजन से अधिक सवारी रखना
२ आवश्यकीय वस्तुओं का अति संग्रह करना।
३ दूसरों का विभव देख आश्चर्य या इच्छा करना।
४ अतिलोभ करना
५ मर्यादा से अधिक बोझ लादना

परिग्रह परिमाणुव्रत की भावना–५

५ मनोज्ञ इन्द्रिय विषय का राग त्याग और–५ अमनोज्ञ इन्द्रिय विषय का द्वेष त्याग

दिग्व्रत के अतिचार–५

१ प्रमाद वश मर्यादा से अधिक ऊंचे
२ नीचे
३ चार दिशाओं और चार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विदिशाओं में चले जाना।

४ प्रमाद वश क्षेत्र की मर्यादा बढ़ा लेना।

५ प्रमाद वश की हुई मर्यादा को भूल जाना।

देशव्रत के अतिचार—५

१ मर्यादा के क्षेत्र से बाहर किसी मनुष्य या पदार्थ को भेजना।

२ मर्यादा से बाहर के पुरुष को शब्द द्वारा सूचना देना

३ मर्यादा से बाहर का माल मंगाना।

४ मर्यादा के बाहर के पुरुष को अपना रूप दिखाकर या इशारे से सूचना करना

५ मर्यादा से बाहर के पुरुष को कंकर, पत्थर आदि फेंककर चेतावनी करना।

अनर्थदण्ड के भेद—५

१ पाप उपदेश

२ हिंसा दान

३ अपध्यान

४ दुःश्रुति श्रवण

५ प्रमाद चर्या

अनर्थ दण्ड व्रत के अतिचार—५

१ नीच पुरुषों सरीखे भंड वचन बोलना, काम के वचन कहना।

२ काय की भंडरूप खोटी चेष्टा करना, हाथ पांव मटकाना, मुंह बनाना इत्यादि।

३ व्यर्थ की बकवास करना या छोटी सी बात बहुत आडम्बर बढ़ा कर कहना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ बिना विचारे मन-वचन-काय की प्रवृत्ति करना।

५ अनावश्यक भोगोपभोग सामग्री एकत्र करना या उसका व्यर्थ व्यवहार करना।

भोगोपभोग के नियम—१७

१ भोजन
२ षट् रस
३ पान
४ कुंकुमादि विलेपन
५ पुष्प
६ ताम्बूल
७ गीत
८ नृत्य
९ ब्रह्मचर्य
१० स्नान
११ भूषण
१२ वस्त्र
१३ वाहन
१४ शयन
१५ आसन
१६ सचित वस्तु
१७ अन्यवस्तु संख्या

भोगोपभोग परिमाणुव्रत के अतिचार—५

१ विषय भोगों में प्रीति करना

२ पूर्वकाल में भोगे हुए भोगों का स्मरण करना।

३ वर्तमान भोग भोगने में अति लम्पटता रखना।

४ भविष्य में भोग प्राप्ति की अति तृष्णा करना।

५ विषय न भोगने पर भी विषय भोगने सरीखा अनुभव करना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

या।

१ भूल से त्यागी हुई सचित्त वस्तु भक्षण कर लेना।

२ सचित्त से सम्बन्ध रूप अर्थात सचित्त पर रक्खा हुआ या सचित्त से ढंका हुआ भोजन करना।

३ सचित्त मिश्रित भोजन करना।

४ जो दुःपक्व अर्थात दुःख से पचे या अधपका हो अर्थात् अधिक पककर बे-स्वाद या कुरूप हो गया हो, ऐसा भोजन करना।

५ पुष्टिकारक भोजन करना।

सामायिक के योग्य साधन

१ योग्य द्रव्य

२ योग्य क्षेत्र

३ योग्य काल

४ योग्य आसन

५ योग्य विनय

६ मन शुद्धि

७ वचन शुद्धि

८ काय शुद्धि

सामायिक के अतिचार-५

१. २. ३. मन-वचन-काय का अशुभ प्रवर्तना।

४ सामायिक करने में अना-दर करना।

५ सामायिक का समय वा पाठ भूल जाना।

आहार—४

१ खाद्य

२ स्वाद्य

३ लेह्य

४ पेय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथवा
१ असन
२ पान
३ खाद्य
४ स्वाद्य

प्रोषधोपवास के अतिचार—५

१ बिना देखे शोधे पूजा के उपकरण, शास्त्र, संस्तर आदि ग्रहण करना।
२ बिना देखे शोधे मलमूत्र आदिक मोचन करना।
३ बिना देखे शोधे संस्तर बिछौना बिछाना।
४ भूख, प्यास के क्लेश से उत्साह हीन होकर उपवास में निरादर रूप परिणाम करना।
५ उपवास योग्य क्रियाओं का भूल जाना।

दान के स्थान—७

१ पूजा
२ प्रतिष्ठा
३ तीर्थयात्रा
४ पात्रदत्ति
५ समदत्ति
६ दयादत्ति
७ सर्वदत्ति

दान—४

१ आहार दान
२ औषध दान
३ अभय दान
४ शास्त्र दान

दाता के गुण—७

१ श्रद्धा
२ तुष्टि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ भक्तिः
४ विज्ञान
५ अलुब्धता
६ क्षमा
७ सत्त्व

दाता के दोष–५

१ कूटना
२ पीसना
३ चूल्हा सिलगाना
४ पानी भरना
५ बुहारी देना

नवधा भक्ति

१ पड़गाहन
२ उच्चस्थान
३ पाद उदक
४ अर्चा
५ प्रणाम
६ मनः शुद्धि
७ वचन शुद्धि
८ काय शुद्धि
९ एषणा शुद्धि

दान की विशेषता–४

१ दाता
२ द्रव्य
३ विधि
४ पात्र

पात्रदान के अतिचार–५

१ दान में दी जाने वाली वस्तुएं हरित पत्र में रखना
२ हरित पत्र से ढांकना
३ अनादर से दान देना
४ दान की विधि भूल जाना या दान देने की सुधि न रखना।
५ ईर्ष्या बुद्धि से दान देना

समाधि मरण के अति-चार–५

१ जीवित आशंसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ मरण आशंसा
३ मित्र अनुराग
४ सुखानुबन्ध
५ निदान

प्रतिमा—११

१ दर्शन प्रतिमा
२ व्रत प्रतिमा
३ सामायिक प्रतिमा
४ प्रोषध प्रतिमा
५ सचित्त त्याग प्रतिमा
६ रात्रि भुक्त त्याग प्रतिमा
या
दिवा मैथुन त्याग प्रतिमा
७ ब्रह्मचर्य प्रतिमा
८ आरम्भ त्याग प्रतिमा
९ परिग्रह त्याग प्रतिमा
१० अनुमति त्याग प्रतिमा
११ उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा
(क) क्षुल्लक
(ख) ऐलक

श्रावक के षट् कर्म

१ देव पूजा
२ गुरू उपासना
३ दान
४ स्वाध्याय
५ संयम
६ तप

ध्यान के मंत्र

१ णमोकार मंत्र
२ अरहंत, सिद्ध-आयरिय, उवझाय, साहू
३ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्योनमः
४ अरहंत सिद्ध
५ नमो अर्हत्सिद्धेभ्यः
६ असिआउसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७ अरहंत
८ सिद्ध
९ ओम्

कल्याण का उपाय—४

१ सत्संग
२ शुद्ध आचरण
३ श्रुत अभ्यास
४ आत्म भावना

भावना—४

१ मैत्री
२ प्रमोद
३ कारुण्य
४ माध्यस्थ

६३ शलाका पुरुष

२४ तीर्थंकर
१२ चक्रवर्ती
९ बलभद्र
९ नारायण
९ प्रतिनारायण

साधु के २८ मूलगुण

५ महाव्रत
अहिंसा महाव्रत
सत्य महाव्रत
अचौर्य महाव्रत
ब्रह्मचर्य महाव्रत
परिग्रह त्याग महाव्रत
५ समिति
५ इन्द्रिय निरोध
६ आवश्यक
समता
वंदना
स्तुति
प्रतिक्रमण
स्वाध्याय
कायोत्सर्ग
१ केश लोच
१ अचेलक्य (नग्न)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ अस्नान
१ क्षिति शयन
१ अदंत धावन
१ स्थिति भोजन
१ एक भुक्ति

पंच आचार

१ दर्शनाचार
१ ज्ञानाचार
३ चारित्राचार
४ तपाचार
५ वीर्याचार

गुप्ति–३

१ मनो गुप्ति
२ वचन गुप्ति
३ काय गुप्ति

समति–५

१ ईर्या
२ भाषा
३ एषणा
४ आदान निक्षेपण
५ व्युत्सर्ग

धर्म–१०

१ उत्तम क्षमा
२ उत्तम मार्दव
३ उत्तम आर्जव
४ उत्तम सत्य
५ उत्तम शौच
६ उत्तम संयम
७ उत्तम तप
८ उत्तम त्याग
९ उत्तम आकिंचन
१० उत्तम ब्रह्मचर्य

अनुप्रेक्षा–१२

१ अनित्य
२ अशरण
३ संसार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ एकत्व
५ अन्यत्व
६ अशुचि
७ आस्रव
८ संवर
९ निर्जरा
१० लोक
११ बोधि दुर्लभ
१२ धर्म

परीषय जय-२२

१ क्षुधा
२ तृषा
३ शीत
४ उष्ण
५ दशंमशक
६ नाग्नय
७ अरति
८ स्त्री
९ चर्या
१० निषद्या
११ शय्या
१२ आक्रोश
१३ वध
१४ याचना
१५ अलाभ
१६ रोग
१७ तृणस्पर्श
१८ प्रज्ञा
१९ मल
२० सत्कार पुरस्कार
२१ अज्ञान
२२ अदर्शन

चारित्र-५

१ सामायिक
२ छेदोपस्थापना
३ परिहार विशुद्धि
४ सूक्ष्म साम्पराय
५ यथाख्यात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तप—२

१ वाह्य तप
२ अभ्यन्तर तप

बाह्य तप—६

१ अनशन
२ अवमौदर्य
३ वृत्ति परिसंख्यान
४ रस परित्याग
५ विविक्त शय्यासन
६ काय क्लेश

अभ्यन्तर तप—६

१ प्रायश्चित
२ विनय
३ वैयावृत्य
४ स्वाध्याय
५ व्युत्सर्ग
६ ध्यान

प्रायश्चित—९

१ आलोचना
२ प्रतिक्रमण
३ तदुभय
४ विवेक
५ व्युत्सर्ग
६ तप
७ छेद
८ परिहार
९ उपस्थापना

विनय—४

१ ज्ञान विनय
२ दर्शन विनय
३ चारित्र विनय
४ उपचार विनय

वैयावृत्य—१०

१ आचार्य
२ उपाध्याय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ तपस्वी
४ शैक्ष्य
५ ग्लान
६ गण
७ कुल
८ संघ
९ साधु
१० मनोज्ञ

स्वाध्याय–५

१ वाचना
२ प्रच्छना
३ अनुप्रेक्षा
४ आम्नाय
५ धर्मोपदेश

व्युत्सर्ग–२

१ बाह्य उपधि त्याग
२ आभ्यंतर उपधि त्याग

अनंत चतुष्टय–४

१ अनंत दर्शन
२ अनंत ज्ञान
३ अनंत सुख
४ अनंत वीर्य

सिद्धों के गुण–८

१ सम्यक्त्व
२ केवल ज्ञान
३ केवल दर्शन
४ वीर्य
५ अव्याबाधत्व
६ अवगाहनत्व
७ अगुरुलघुत्व
८ सूक्ष्मत्व

परमेष्ठी-५

१ अरिहंत (अरिहन्त)
२ सिद्ध (अशरीरि)
३ आचार्य
४ उपाध्याय
५ सर्वसाधु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकर-२४
१ ऋषभनाथ
२ अजितनाथ
३ सम्भवनाथ
४ अभिनन्दननाथ
५ सुमतिनाथ
६ पद्म प्रभुस्वामी
७ सुपार्श्वनाथ
८ चन्द्रप्रभु
९ पुष्पदन्तनाथ
१० शीतलनाथ
११ श्रेयांसनाथ
१२ वासुपूज्य
१३ विमलनाथ
१४ अनन्तनाथ
१५ धर्मनाथ
१६ शांतिनाथ
१७ कुन्थुनाथ
१८ अरहनाथ
१९ मल्लिनाथ
२० मुनि सुव्रतनाथ
२१ नमिनाथ
२२ नेमीनाथ
२३ पार्श्वनाथ
२४ वर्द्धमान (महावीर स्वामी)

कल्याणक-५
१ गर्भ कल्याणक
२ जन्म कल्याणक
३ तप कल्याणक
४ ज्ञान कल्याणक
५ निर्वाण (मोक्ष) कल्याणक

जन्म के १० अतिशय
१ अतिशय रूप
२ अति सुगन्ध
३ पसेवरहित शरीर
४ निहार रहित
५ अतुल्य बल
६ हितमित प्रिय वचन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७ दूध के समान सफेद खून
८ शरीर में १००८ लक्षण
९ समचतुरस्र संस्थान
१० वज्रवृषभ नाराच संहनन

केवल ज्ञान के १० अतिशय

१ एक सौ योजन में सुभिक्षता
२ आकाश में गमन
३ चारों ओर मुखों का दीखना
४ अदया का अभाव
५ उपसर्ग का न होना
६ कवलाहार न लेना
७ समस्त विद्याओं का स्वामीपना
८ नख केशों का न बढ़ना
९ नेत्रों की पलकें न झपकना
१० शरीर की छाया न पड़ना

देवकृत १४ अतिशय

१ भगवान की अर्द्ध मागधी भाषा का होना।
२ समस्त जीवों में परस्पर मित्रता का होना
३ दिशाओं का निर्मल होना।
४ सर्व ऋतुओं का फलना।
५ दर्पण के समान पृथ्वी का होना
६ स्वर्ण कमलों की रचना होना।
७ मंद सुगन्धित पवन का चलना।
८ आकाश में जय २ ध्वनि का होना।
९ आकाश का निर्मल होना।
१० सुगंधित जल की वृष्टि होना।
११ भूमि का कंटक रहित होना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ समस्त जीवों का आनन्द-
मय होना
१३ धर्मचक्र का होना
१४ अष्ट मंगल द्रव्यों का होना

प्रातिहार्य - ८

१ अशोक वृक्ष
२ सिंहासन
३ छत्रत्रय
४ चौसठ चमर (चंवर)
५ भामण्डल (प्रभामंडल)
६ पुष्पवृष्टि
७ दुंदुभि बाजे
८ दिव्य ध्वनि

दोष–१८

१ जन्म
२ जरा
३ तृषा
४ क्षुधा
५ विस्मय
६ खेद
७ रोग
८ शोक
९ भय
१० निद्रा
११ चिंता
१२ स्वेद
१३ राग
१४ द्वेष
१५ मरण
१६ अरति
१७ मद
१८ मोह

आत्मा की शक्तियें–४७

१ जीवत्व शक्ति
२ चिति शक्ति
३ दृशि शक्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ ज्ञान शक्ति	२३ निष्क्रियत्व
५ सुख शक्ति	२४ नियत प्रदेशत्व
६ वीर्य शक्ति	२५ सर्वधर्म व्यापकत्व
७ प्रभुत्व शक्ति	२६ साधारण असाधारण साधारण/धरणत्व (असा
८ विभुत्व शक्ति	२७ अनन्त धर्मत्व
९ सर्वज्ञत्व	२८ विरुद्ध धर्मत्व
१० सर्वदर्शित्व	२९ तत्त्व शक्ति
११ स्वच्छत्व	३० अतत्त्व ,,
१२ प्रकाशत्व	३१ एकत्व ,,
१३ असंकुचित विकाशत्व	३२ अनेकत्व ,,
१४ अकार्य कारणत्व	३३ भाव ,,
१५ परिणम्य परिणामकत्व	३४ अभाव ,,
१६ त्यागोपादन शून्यत्व	३५ भाव अभाव ,,
१७ अगुरुलघुत्व	३६ अभाव भाव ,,
१८ उत्पाद व्यय ध्रौव्यत्व	३७ भाव भाव ,,
१९ परिणाम शक्ति	३८ अभाव अभाव ,,
२० अमूर्तत्व	३९ भवन ,,
२१ अकर्तृत्व	४० क्रिया ,,
२२ अभोक्तृत्व	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१ कर्मत्व शक्ति
४२ कर्तृत्व ,,
४३ करणत्व ,,
४४ संप्रदानत्व ,,
४५ अपादानत्व ,,
४६ अधिकरणत्व ,,
४७ सम्बन्ध शक्ति

नय–४७ (प्रवचन सार से)

१ नाम नय
२ स्थापना नय
३ द्रव्य नय
४ भाव नय
५ सामान्य
६ विशेष नय
७ सविकल्प
८ निर्विकल्प
९ शून्य
१० अशून्य
११ द्रव्य नय
१२ पर्याय नय
१३ अस्ति नय
१४ नास्ति नय
१५ उभय नय
१६ अवक्तव्य नय
१७ अस्ति अव्यक्तव्य नय
१८ नास्ति अवक्तव्य नय
१९ उभय अवक्तव्य नय
२० सर्वगत नय
२१ असर्वगत नय
२२ द्वैत नय
२३ अद्वैत नय
२४ नियत नय
२५ अनियत नय
२६ काल नय
२७ अकाल नय
२८ स्वभाव नय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९ अस्वभाव नय	३९ क्रिया नय
३० पुरुषार्थ नय	४० शुद्ध नय
३१ दैव नय	४१ अशुद्ध नय
३२ कर्तृत्व नय	४२ निश्चय नय
३३ अकर्तृत्व नय	४३ व्यवहार नय
३४ भोक्तृत्व नय	४४ ईश्वर नय
३५ अभोक्तृत्व नय	४५ अनीश्वर नय
३६ गुणी नय	४६ नित्य नय
३७ अगुणी नय	४७ अनित्य नय
३८ ज्ञान नय	

सातवां अध्याय

नमस्कार मन्त्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

नमस्कार मन्त्र का महात्म्य

एसो पंच णमो यारो सव्व पावप्पणासणो ।
मंगलाणंच सव्वेसिं पढ़मं हवई मंगलं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मगंल पाठ

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहन्ते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

वर्तमान २४ तीर्थंकर

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपास प्रभुचन्द।
पुहपदन्त शीतल श्रेयांस प्रभु, वासु पूज्य प्रभु विमल सुछन्द।
धर्मि अनन्त धर्म प्रभु शान्ति सु, कंथु अरह जिन मल्लि अनन्द
मुनिसुव्रत नमि नेमि पास, वीर सकल वन्दों सुख कंद॥

सम्यग्दर्शन

आतम अनुभव नियत नय, व्यवहारे तत्त्वार्थ।
देव धर्म-गुरु-मान्यता, सम्यग्दर्शन सार्थ॥

सम्यग्ज्ञान

निश्चय आतम ज्ञान पुनि, साधन आगम बोध।
सम्यक्दर्शन पूर्व जिहि, सम्यक्ज्ञान विशोध॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक् चारित्र

निज स्वरुप में रमणता, सम्यक् चारित्र धर्म।
व्यवहारैं द्वै विधि कही, श्रावक अरु मुनि धर्म॥

श्रावक की ५३ क्रियाएं

गुण-व्रत-तप सम-पडिमा, दाणंजलगालणंच अणथमियं।
दंसण-णाण-चरित्तं, किरिया तेवण्ण सावया भणिया॥

अर्थः—८ मूलगुण, १२ व्रत, १२ तप, १ समता (कषायों की मन्दता) ११ प्रतिमा, ४ दान, १ जल गालण, १ रात्रि भोजन त्याग, १ दर्शन, १ ज्ञान, १ चारित्र ॥५३॥

धर्मोपदेश

अन्यस्थाने कृतं पापं, धर्मस्थाने विमुच्यते।
धर्मस्थाने कृतं पापं, वज्रलेपो भविष्यति॥

ग्रहस्थ के १७ यम

१	२	३	४	५
कुगुरु,	कुदेव,	कुनृप की सेवा	अनर्थ दण्ड	अघमय व्यापार।

६	७	८	९	१०	११	१२	१३
द्यूत,	मांस,	मधु,	वेश्या,	चोरी,	परतिय,	हिंसादान,	शिकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४ १५ १६ १७
...य की हिंसा, थूल असत्यरू, बिनछान्यो जल निशि आहार ।
...ह सत्रह अनर्थ जगमाहीं, यावज्जीव करो परिहार ॥

२२ अभक्ष्य

...ला, घोरबड़ा, निशिभोजन, बहुबीजा, बैंगन संधान ।
...र, पीपर, ऊमर, कठूमर, पाकर, फल जो होय अजान ॥
...दमूल, माटी, विष, आमिष, मधु, माखन, अरू मदिरा पान ।
...ल अतितुच्छ, तुषार, चलितरस, ये जिनमत बाईस अखान ॥

भोगोपभोग परिमाण के १७ नियम

भोजने षट्रसे पाने कुंकुमादिविलेपने ।
पुष्पताम्बूलगीतेषु, नृत्यादौ ब्रह्मचर्यके ॥
स्नानभूषणवस्त्रादौ, वाहने शयनासने ।
सचित्तवस्तुसंख्यादौ प्रमाणं भज प्रत्यहं ॥

अरहन्त परमेष्ठी के मूलगुण

चौंतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्य पुनि आठ ।
अनन्तचतुष्टय गुणसहित, ये छयालीसों पाठ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौतीस अतिशय

दस अतिशय हैं जन्म के, दश ही केवलज्ञान।
चौदह होते देवकृत, अतिशय चौंतीस जान॥

जन्म के १० अतिशय

अतिशयरूप सुगन्ध तन, नाहिं पसेव निहार।
प्रियहित वचन अतुल्य बल, रुधिरश्वेत आकार॥
लक्षण सहसरुआठतन, सम चतुष्क संठान।
वज्रवृषभ नाराचजुत, ये जनमत दश जान॥

केवलज्ञान के १० अतिशय

योजन शत इकमें सुभिख, गगन गमन मुखचार।
नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाहिं कवलाहार॥
सब विद्या ईश्वर पनो, नाहिं बढ़ैं नख केश।
अनिमिष दृग छायारहित, दश केवल के वेश॥

देवकृत १४ अतिशय

देवरचित हैं चारदश, अर्धमागधी भाष।
आपसमाहीं मित्रता, निर्मल दिश आकाश॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होत फूल फल ऋतु सबै, पृथ्वी कांच समान।
चरण कमल तल कमल है, नभतैं जय जय बान॥
मन्द सुगन्ध बयार पुनि, गन्धोदक की वृष्टि।
भूमि विषै कंटक नहीं, हर्षमई सब सृष्टि॥
धर्म चक्र आगे रहै, पुनि वसु मंगल सार।
अतिशय श्री अरिहन्त के, ये चौंतीस प्रकार॥

८ प्रातिहार्य

तरु अशोक के निकट में, सिंहासन छविदार।
तीन छत्र सिर पर लसे, भामण्डल पिछवार॥
दिव्य ध्वनि मुख तैं खिरै पुष्पवृष्टि सुर होय।
ढोरैं चौंसठ चमर जख, बाजे दुन्दुभि जोय॥

४ अनन्त चतुष्टय

ज्ञान अनन्त, अनन्त सुख, दरश अनन्त प्रमाण।
बल अनन्त अरिहन्त सो, इष्ट देव पहिचान॥

१८ दोष

जन्म जरा तिरखा क्षुधा, विस्मय आरत खेद।
रोग शोक मद मोह भय, निद्रा चिन्ता स्वेद॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राग द्वेष अरु मरणजुत, ये अष्टादश दोष।
नहिं होत अरिहन्त के सो छवि लायक मोष॥

सिद्ध परमेष्ठी के ८ मूलगुण

समकित दर्शन ज्ञान अगुरूलघू अवगाहना।
सूक्ष्म वीरजवान, निराबाध गुण सिद्ध के॥

आचार्य परमेष्ठी के ३६ मूलगुण

द्वादश तप दश धर्म जुत, पालें पंचाचार।
षट् आवशि त्रयगुप्ति गुण, आचारज पद सार॥

१२ तप

अनशन ऊनोदर करे, व्रत संख्या रस छोर।
विविक्त शयन आसन धरे, कायकलेश सुठोर।
प्रायश्चित्त धर विनयजुत, वैयावृत स्वाध्याय।
पुनि उत्सर्ग विचार के, धरै ध्यान मन लाय॥

१० धर्म

छिमा मारदव आरजव, सत्य वचन चित पाग।
संजम तप त्यागी सरव, आकिंचन तिय त्याग॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पांच आचार और तीन गुप्ति

दर्शन ज्ञान चारित्र तप, वीरज पंचाचार ।
गोपैं मन वच काय को, गिन छत्तीस गुन सार ॥

छह आवश्यक

समता धर वन्दन करै, नाना थुती बनाय ।
प्रतिक्रमण स्वाध्याय जुत कायोत्सर्ग लगाय ॥

उपाध्याय का लक्षण

चौदह पूरव को धरै, ग्यारह अंग सुजान ।
उपाध्याय पच्चीस गुण, पढ़े पढ़ावें ज्ञान ॥

११ अंग

प्रथमहिं आचारांग गनि; दूजौ सूत्रकृतांग
ठाण अंग तीजो सुभग, चौथो समवायांग
व्याख्यापण्णति पांचमो, ज्ञातृकथा षट् जान
पुनि उपासकाध्ययन है, अन्तः कृत दश ठान
अनुत्तर उत्पाद दश, सूत्र विपाक पिछान
बहुरि प्रश्न व्याकरण जुत, ग्यारह अंग प्रमान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४ पूर्व

उत्पाद पूर्व अग्रायणी, तीजो वीरजवाद
अस्ति नास्ति परवाद पुनि, पंचम ज्ञान प्रवाद
छट्टो कर्म प्रवाद है, सत्प्रवाद पहिचान
अष्टम आत्मप्रवाद पुनि, नवमो प्रत्याख्यान
विद्यानुवादपूरव दशम, पूर्वकल्याण महन्त
प्राणवाद किरिया बहुल, लोक बिन्दु है अन्त

साधू के २८ मूलगुण

पंच महाव्रत समिति पंच, पंच इन्द्रिय का रोध
षट् आवश्यक साधु गुण, सात शेष अवबोध

पांच महाव्रत

हिंसा अनृत तस्करी, अब्रह्म परिग्रह पाप
मन वचन तन तैं त्यागवौ, पंच महाव्रत थाय

पांच समिति

ईर्या भाषा एषणा, पुनि क्षेपण आदान
प्रतिष्ठापना जुत क्रिया, पांचो समिति विधान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शेष गुण

सपरस रसना नासिका, नयन श्रोत्र का रोध
शेष सात मंजन तजन, शयन भूमिका शोध
वस्त्र त्याग कचलुंच अरु, लघु भोजन इकवार
दांतुन मुख में ना करें, ठाडें लेहिं आहार

१ जूआ त्याग

जूआ खेले मनुष्य की रहती नेक न आब
औरों की गिनती कहां, पाण्डव हुए खराब।

२ मांस त्याग

बक राजा ने मांस खा, खोया राज महान
मरकर दुर्गति को गया, हुआ यहाँ अपमान।

३ मदिरा त्याग

मदिरा पी मत्ता मलिन, लौटें बीच बजार
मुख में मूतें कुकरा, चाटे बिना विचार।
'एक पाद' साधू यहां, कर-कर मदिरा पान
चाण्डालों के हाथ से, खो बैठा निज जान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ शिकार त्याग

जैसे अपने प्राण है, तैसे पर के जान
कैसे हरते दुष्ट जन, बिना वैर पर प्रान
भैरव ने मारा हिरण, फसा सुअर पर बान
जीता ही शुकर वचा, ली भैरव की जान

५ वेश्या त्याग

चारु दत्त की चतुरता, 'तिलका' ने की चूर
पूरा उसका धन हड़प, दिया नालि में पूर
द्विज खत्री कोली वनिक, गनिका चाखत लाल
ताको सेवत मूढ जन, मानत जन्म निहाल

६ चोरी त्याग

अपसर साधू होय कर, चोरी कर मतिहीन
राजदण्ड को भोग कर, मरा लहि गति हीन।

७ पर स्त्री त्याग

सिा सेई नाहीं छुई, रावन पाई धात
चली जात निंदा अजों, जग में भई विख्यात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सप्त व्यसन

जूआ चोरी मांस मद वेश्या रमण शिकार।
पर रमणी रति व्यसन ये सातो हैं दुखकार॥

प्रतिमा लक्षण

संयम अंश जगौ जहां, भोग अरुचि परिणाम।
उदय प्रतिज्ञा को भया, पड़िमा ताका नाम॥

११ प्रतिमा

दर्शन, व्रत सामायिक प्रोषध, भक्ति-सचित रात्रि परिहार।
ब्रह्मचर्य, आरम्भ त्याग वा नवम् परिग्रह त्याग विचार॥
अनुमति त्याग उद्दिष्ट त्याग कहि, प्रतिमा ग्यारह श्रीगणधार।
अगली प्रतिमा में पूरब की, त्रुटि सह्मना होय चितार॥

१ दर्शन प्रतिमा

अष्ट मूलगण संग्रह करै, व्यसन अभक्ष्य सवै परिहरै।
युत अष्टांग शुद्ध सम्यक्त्व, धरहि प्रतिज्ञा दर्शन रक्त॥

२ व्रत प्रतिमा

अणुव्रत पन अतिचार विहीन, धारहिं जो पुन गुणव्रत तीन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौ शिक्षाव्रत संजुत सोय, व्रत प्रतिमा धर श्रावक होय ॥

३ सामायिक प्रतिमा

सब जीव में समभाव धर, शुभ भावना संयम मही ।
दुर्ध्यान आरत रौद्र तजकर, त्रिविध काल प्रमान ही ॥
परमेष्ठी पन जिन वचन जिनवृष, बिंबजिन जिनग्रह तनी ।
वन्दन त्रिकाल करै सुजानहु, भव्य सामायिक धनी ॥

४ प्रोषध प्रतिमा

वर मध्यम जघन त्रिविध धरेय, प्रोषधविधियुत निजबल प्रमेय ।
प्रतिमास चार पर्वो मंझार, जानहु सो प्रोषध नियम धार ॥

५ सचित्त त्याग प्रतिमा

जो परिहरै सचित सब चीज, पत्र प्रवाल कंद फल बीज ।
अरु अप्रासुक जल भी सोय, सचित्त त्याग प्रतिमाधर सोय ॥

६ रात्रिभोजनत्याग प्रतिमा

मन वच तन कृत कारित अनुमोदै नहीं ।
नवविधि मैथुन दिवस माहिं जो वर्जै ही ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरु चतुर्विध आहार निशामाही तजै ।
रात्रि भुक्ति परित्याग प्रतिमा सो सजै ॥

७ ब्रह्मचर्य प्रतिमा

मैथुन नव संकल्प प्रभेद, सर्व प्रकार तजै निरखेद ।
नारि कथादिक भी परिहरै, ब्रह्मचर्य प्रतिमा को धरै ॥

८ आरम्भ त्याग प्रतिमा

जो कुछ, अल्प बहुत अघकाज, ग्रहसम्बन्धि सो सब त्याज ।
निरारम्भ ह्वै वृषरत रहै, सो जिय अष्टम प्रतिमा वहै ॥

९ परिग्रह त्याग प्रतिमा

वस्त्रमात्र रख परिग्रह अन्न, त्याग करै जो व्रतसम्पन्न ।
तामें पुनि मूर्च्छा परिहरै, नवमी प्रतिमा सो भवि धरै ॥

१० अनुमतित्याग प्रतिमा

जो प्रमाण अघमय उपदेश, देय नहीं पर को लवलेश ।
तसु अनुमोदन भी जो तजै, सो ही दशमी प्रतिमा सजै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११ उद्दिष्टत्याग प्रतिमा

ग्यारम थान भेद है दोय, इक क्षुल्लक एक ऐलक सोय।
खण्डवस्त्रधर प्रथम सुजान, युत कौपीनहि दुतिय पिछान ॥
ये ग्रह त्याग मुनि ढिग रहै, वा मठ मन्दिर में निवसहैं।
उतर दण्ड उचित आहार करहिं शुद्ध अन्त्राय निहार ॥

प्रतिमाधारी का गुणस्थान-पांचवा

इमि सब प्रतिमा एकादश, "दौल" देशव्रत थान।
गहै अनुक्रम मूल सह, पालें भवि सुखदान ॥

अध्याय ८

कर्म प्रकृत्तियों के १५ स्थान

संक्रमण के भेद ५

१ उद्वेलन प्र. १३ (मो. २, गो. १, नाम १०)
२ विध्यात प्र. ६७ (द. ३, वे. १, मो. १८, नाम ४३, गो. २)
३ अधः प्रवृत्त प्र. १२१ (उदय यो. १२२ में से-मिथ्यात्व=१२१)
४ गुण संक्रमण प्र. ७५ (द. ५, वे. १, मो. २३, नाम ४४, गो. २)
५ सर्व सं. प्र. ५२ (द. ३, मो. २७, नाम २१, गोत्र १)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नव प्रश्न चूलिका (९)

१ उपर वन्धी प्र. ८ (आ. १, नाम ७)
२ नीचे वन्धी प्र. ८१ (ज्ञा. ५, द. ९, अंत. ५, मो. ५, वे. २, आ. ३, ना. ५०, गो २)
३ वंधोदय समान प्र. ३१ (मो. २१, नाम १०)
४ स्वोदय वंधी प्र. २७ (ज्ञा. ५, द. ४, अंत. ५, मो. मि. १ नाम १२)
५ परोदय वंधी प्र. ११ (आ. २, नाम ९)
६ उभय वंधी प्र. ८२ (द. ५ नि., वे. २, गो. २, आ. २, मो. २५, नाम ४६)
७ सांतर वन्धी प्र. ३४ (वे. १ अ., नाम २९, मो. ४)
८ निरन्तर वन्धी प्र. ५४ (तीनघाति की १९, मो १९, आ. ४, नाम १२)
९ उभय वन्धी प्र. ३२ (वे. सा. १, मो. ३, नाम २६, गो. २)

कर्म प्रकृत्तियों का विशेष विवरण

१ अल्पतर बन्ध १ से १३ तक, भुजाकार ११ से १ तक, अवस्थित बन्ध ११-१२-१३ में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्म प्रकृत्तियों का विवरण–३७ प्रकार से

१ ध्रुव प्र. ४७ (ज्ञा. ५, द. ९, मो. १९, नाम ९, अंत. ५)
२ अध्रुव प्र. ७३ (मो. ७, आ. ४, नाम ५८, गोत्र २, वेद. २)
३ सप्रतिपक्षी प्र. ६२ (वे. २, मो. ७, नाम ५१, गोत्र २)
४ अप्रतिपक्षी प्र. ५८ (ध्रुव प्र. ४७, आ. ४, नाम ७)
५ घाति प्र. ४७ (ज्ञा. ५, द. ९, मो. २८, अंत. ५)
६ अघाति प्र. १०१ (वे. २, आ. ४, नाम ९३, गोत्र २)
७ देशघाति प्र. २६ (ज्ञा. ४, द. ३, मो. १४, अंत. ५)
८ सर्वघाति प्र. २१ (ज्ञा. १, द: ६, मो. १४)
९ पुण्य प्र. ६८ (वे. १, आयु ३, गोत्र १, नाम ६३)
१० पाप प्र. १०० (घाति ४७, वे. १, आ. १, गोत्र १, नाम ५०)
११ जीव वि. प्र. ७८ (घाति ४७, वेद २, गोत्र २, नाम २७)
१२ पुद्गल वि. ६२ (सिर्फ नाम कर्म की ही)
१३ क्षेत्र वि. ४ (४ आनुपूर्वी नाम की)
१४ भव विपाकी ४ (आयु की ४)
१५ बन्ध योग्य प्र. १२० (मो. २, नाम की २६ को छोड़)
१६ उदय योग्य प्र. १२२ (नाम की २६ को छोड़)
१७ उदीरणा योग्य प्र. १२२ (नाम की २६ को छोड़)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८ सत्ता योग्य प्र. १४८ (सर्व ही सत्ता योग्य है)
१९ दर्शनाव. के बन्ध स्थान ३ (९, ६, ४ का)
२० दर्शनाव. के उदय स्थान २ (५ या ४ का)
२१ दर्शनाव. के सत्त्व स्थान ३ (९, ६, ४ का)
२२ मो. के बन्ध स्थान १० (२२, २१, १७, १३, ९, ५, ४, ३, २, १ का)
२३ मो. के उदय स्थान–९ (१०, ९, ८, ७, ६, ५, ४, २, १ का)
२४ मो. के सत्त्व स्थान–१५ (२८, २७, २६, २४, २३, २२, २१, १३, १२, ११, ५, ४, ३, २, १ का)
२५ नाम के बन्ध स्थान–८ (२३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१, १ का)
२६ नाम के उदय स्थान–१२ (२०, २१, २४ से ३१ तक ९, ८ का)
२७ नाम के सत्त्व स्थान–१३ (९३ से ९०, ८८, ८४, ८२, ८० से ७७, १०, ९ का)
२८ ज्ञानावरण का बन्ध १०, उदय १२, सत्ता १२ तक मूल भे. १, उत्तर भेद ५, उ. स्थिति ३० को. ज. स्थि. अंतर्मू.
२९ दर्शनाव, का बन्ध १०, उदय १२, सत्ता १२ तक मूल भे. १ उत्तर भेद ९, उत्तर स्थिति ३० को., ज. स्थि. अतर्मू.
३० अन्तराय का बन्ध १०, उदय १२, सत्ता १२ तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूल भे. १, उत्तर भेद ५, उ. स्थिति ३० को., ज. स्थि. अंतमू.
३१ मोहनीय का बन्ध ९, उदय १०, सत्ता ११ तक, मूल भे. १, उत्तर भेद २८, उ. स्थिति ७० को., ज. स्थि. अंतमू.
३२ आयु का बन्ध ७, उदय १४, सत्ता १४, मूल भेद १, उत्तर भेद ४, उ. स्थिति ३३ सागर, ज. स्थिति अंतमू.
३३ नाम का बन्ध १०, उदय १४, सत्ता १४, मूल भेद १, उत्तर भेद ९३, उ. स्थिति २० को, ज. स्थि. ८ मू.
३४ गोत्र का बन्ध १०, उदय १४, सत्ता १४, मूल भेद १, उत्तर भेद २, उ. स्थिति २० को., ज. स्थि. ८ मू.
३५ वेदनीय का बन्ध १३, उदय १४, सत्ता १४, मूल भेद १, उत्तर भेद २, उ. स्थिति ३० को., ज. स्थि. १२ मू.
३६ नाम कर्म की पींड प्र १४ (६५) गत्यादि ।
३७ नाम कर्म की अपींड प्र. २८ (युगल १०, अगुरु. ८)

गुण स्थानों में सप्त भंगी

गुणस्थान	बन्धप्र.	उदयप्र.	सत्ताप्र.	भावउ.	भावमू.	आ.मू.	उ.आ.
१ मिथ्यात्व	११७	११७	१४८	३४	३	४	५५
२ सासा:	१०१	१११	१४५	३२	३	३	५०
३ मिश्र	७४	१००	१४७	३३	३	३	४३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४	अवि. स.	७७	१०४	१४८	३६	५	३	४६
५	देश वि.	६७	८७	१४७	३१	५	२½	३७
६	प्रमत्त वि.	६३	८१	१४६	३१	५	२	२४
७	अप्र. वि.	५९	७६	१४६	३१	५	२	२२
८	अपू क.	५८	७२	१३८	२८	५	२	२२
९	अनि. क.	२२	६६	१३८	२८	५	२	१६
१०	सू. सा.	१७	६०	१०२	२२	५	२	१०
११	उप. मो.	१	५९	१४२	२१	५	१	९
१२	क्षी. मो.	१	५७	१०१	२०	४	१	९
१३	सयोगके.	१	४२	८५	१४	३	१	७
१४	अ. के.	०	१२	८५	१३	३	०	०
	सिद्ध अश.	०	०	०	५	२	०	०

गुण स्थान

करण–१०, (८ गुण. तक १०/९, १० में ७/११, १२, १३ में ६/१४ गु में २ ही है)

बन्ध १३ तक, उदय १४ तक, उदीरणा १३ तक, सत्ता १४ तक, उत्कर्षण १३ गु. तक, अपकर्षण १३ गु. तक, संक्रमण १० गु. तक, उपशम (उदीरणाबिन) ८ गु. तक, निधात्ति (उदी. संक्र. रहित) निकाचित (उदी , सं., उ., अप., रहित) ८ गु. तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४ ऋद्धियों के नाम या नामावली

१ बुद्धि ऋद्धि १८ प्रकार की

केवल १, अवधि २, मनः प० ३, बीज ४, कोष्ठ ५, पादानु सा० ६, संभिन्न श्रोत्र ७, दूर स्पर्शन ८, रसन ९, घ्राण १०, दर्शन ११, श्रोत्र १२, दशपूर्व १३, १४ पूर्व १४, अष्टांग निमित्त ज्ञान १५, प्रज्ञा श्रवण १६, प्रत्येक बुद्धि १७ और वादित्व १८ ये १८ भेद बुद्धि ऋ० के है।

२ क्रिया ऋद्धि ९ (चारण ऋद्धि-९) प्रकार की

जल १, जंघा २, बीज ३, तंतु ४, पुष्प ५, पत्र ६, श्रेणी ७, अग्नि ८ एवं आकाश चारण ९

३ विक्रिया ऋद्धि ११ प्रकार की

अणिमा १, महिमा २, लघि० ३, गरिमा ४, प्राप्ति ५, प्राकाम्य ६, ईशत्व ७, वशित्व ८, अप्रतिघात ९, अंतर्ध्यान १०, कामरूपणी ११, ये ११ भेद है।

४ बल ऋद्धि-३ प्रकार की

मनोबल ऋद्धि १, वचन बल ऋद्धि २ एवं कायबल-ऋद्धि ३ ये ३ भेद है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ तप ऋद्धि—७ प्रकार की

उग्रतप १, दीप्त० २, तप्ततप ३, महातप ४, घोरतप ५, घोर ब्रह्मचर्य ६, घोर पराक्रम ७

६ औषधि ऋद्धि—८ प्रकार की

आमर्श-औषधि १, खेलौषधि २, जलौषधि ३, मलौषधि ४, विंदुस्पर्शौ० ५, सर्व अवयव स्पर्शौषधि ६, आशिविषौधि ७, दृष्टिविषौषधि ८ ये ८ भेद है।

७ रस ऋद्धि—६ प्रकार की

आशीविष १, दृष्टिविष २, क्षीरश्रावी ३, मधुश्रावी ४, सर्पिस्रावी ५, अमृत श्रावी ६

८ अक्षीण ऋद्धि—२ प्रकार की

१ अक्षीणमहानस (द्रव्य अटूट) २ अक्षीण महालय (क्षेत्र)

भावनाये—१००+२५ (१२५)

१ अहिंसादि ५ व्रतो की—२५

२ पंच पापो के त्याग की—५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGango

३ मैत्र्यादि–४
४ प्रशमादि–४
५ शल्यो के त्याग की–३
६ संसार-शरीर-भोग के त्याग की–३
७ दर्शन विशुद्धि आदि १६ भावना
८ दश लक्षण धर्म की–१० भावना
९ अनशनादि तपो की–१२ भावना
१० अनित्यादि–१२ भावना
११ ध्यान की–१६ भावना
१२ तत्त्वो की–७ भावना
१३ रत्नत्रय की–३ भावना
१४ अनेकान्त भावना
१५ श्रुत भावना
१६ शुद्धात्म भावना
१७ निरग्रंथ बनने की भावना
१८ द्रव्यो की आदि अनेक भावना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eG

esh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Vara

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

卐 ग्रंथमाला से प्रकाशित ग्रंथ:—

१ सदुपदेश दृष्टांत मालिका भाग १ (लघु कथा सं. ५८)

२ सदुपदेश दृष्टांत मालिका भाग २ (लघु कथा सं. १२१)

३ सदुपदेश दृष्टांत मालिका भाग ३ (लघु कथा सं. ६३)

४ सुखानुभव की तरंगे (तरंग सं. ८५)

५ मनबोध चरित्र (रूपक कथानक)

६ भेद संग्रह भाग १ (अध्याय ८ विषय ५००)

प्राप्ति स्थान:— व्यवस्थापिका:— श्री दि० जैन उदासीन श्राविकाश्रम
तुकोगंज, इन्दौर (म. प्र.)

नरेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, इन्दौर-१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi